प्रेम पत्र

प्यारे पुलिस वालों

सादर प्रणाम।

सब लोग आपको सादर प्रणाम करते हैं क्योंकि यदि ऐसा न करें तो बहुत जल्दी उनपर 'डंडा प्रणाम' हो सकता है।

यह ठीक है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते और आपको उन भूतों को मनाने के लिये लातों का, लाठियों का और गोलियों का प्रयोग करना पड़ता है। परन्तु दुःख उस समय होता है जब आप चोर और डाकुओं और हत्यारों पर लाठी चलाने की बजाय ज़बान भी नहीं हिलाते।

श्री एम. एम. चोपड़ा के बेटे और बेटी जो हत्यारों के शिकार बने, वे मासूम थे, कमसिन थे और भोले-भाले थे। यदि आप चाहते और कुछ कोशिश करते तो शायद उनकी जान बच जाती। लेकिन बहुत अफसोस है कि आपको इतना समय न मिला, न आपके पास ऐसा मंत्र था कि आप हत्यारों को रोकने की कोशिश करते, हालांकि सरदार इन्द्रजीत सिंह ने शहरी हक निभाते हुये वार्निंग दी।

मैं आपकी सेवा में यह सुझाव देना चाहता हूँ कि यदि आपने [illegible] का कल्याण करना है तो सबसे पहले आपको [illegible] करना पड़ेगा। अपराध किसी प्रकार का हो और आपको सूचना मिल जाये [illegible] आपको जोर लगाना ही पड़ेगा। वरना हर मेरे जैसे दीवाने की जान आज खतरे में है।

आपका

चितली



मुकुल ऊल जलूल

थी मेरे आंगन में भीड़ लगी,
मैं किसको कितने नम्बर दूं।
किस-किस से आज दुआयें लूं,
किस-किस को आज नाराज करूं।
मैं भी था अजब मुसीबत में,
किससे कैसा व्यवहार करूं।
चंचल अबलाएँ रुष्ट हुईं,
मुंह फेर पलटकर खड़ी हुईं।
तब मुझे समझ में यह आया,
किसको कितने नम्बर दूं।



दीवाना

अंक : २६, ३१ अगस्त से ६ सितम्बर १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुला गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें [illegible] एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवाना के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



जोगिन्द्र ग्रोवर, पप्पी, पानीपत

प्र० : एक लड़की मुझे चाहती है, लेकिन मैं उसे नहीं चाहता क्या करूं ?

उ० : तुमसे करता प्यार जो, उसे दीजिए प्यार,
ठुकराए जो प्यार को, रूठ जाय करतार।

तसलीम अहमद खान, मुरादाबाद

प्र० : चोरी करने पर जेल होती है, तो प्यार करने पर ?

उ० : चोरी करके बन्द हों, भरें जेल में आह,
सच्चाई हो प्यार में, तो हो जाय निकाह।

देवी दयाल त्रिवेदी, श्रीनगर (गढ़वाल)

प्र० : क्यों जी, यह 'भूत लिंगम् समिति' क्या है ?

उ० : भूत लिंग जी श्रमिक को, यह अधिकार दिलायँ,
भूत काल में 'नस कटीं' उनको फिर जुड़वायँ।

अंजुम मयूख, आफरीदी, कोटा

प्र० : प्रेमी-प्रेमिका बातें कर रहे हों और प्रेमिका का बाप आ जाए तो ?

उ० : घर बैठे वर मिल गया, खुश हो जाए बाप,
वहीं हाथ में हाथ वह, मिलवादे चुपचाप।

रोशन व्यास त्यागी, इन्दौर

प्र० : असली दोस्त की पहिचान बताइए काका जी ?

उ० : भूल गए हैं आज हम, असली की पहिचान,
नकली बिकें दवाइयां, बेबस राजनराण।

चन्द्रभान 'अनाड़ी', जबलपुर

प्र० : क्यों जी काका, यह जवानी क्यों आती है ?

उ० : बच्चा आस लगा रहे, बच्चा मौज उड़ाएँ,
कक्का ज्वानी देखकर, आह भरें पछताएँ।

मोहम्मद शब्बीर, समदानी, बीकानेर

प्र० : गमों को खुशी में बदलने के लिए क्या करना चाहिए ?

उ० : दिल्ली से कर दोस्ती, 'दीवाना' से नेह,
हास्य व्यंग के रंग से, स्वस्थ-मस्त हो देह।

जयपाल चावला, कामठी, नागपुर

प्र० : काका जी, आप बूढ़े हो गए हैं, फिर भी बाल काले क्यों हैं ?

उ० : तीन मील नित घूमते, सायं, प्रातः काल,
वर्ष बहत्तर तक अभी, सिर के काले बाल।

राजकुमार जायसवाल, चास (धनबाद)

प्र० : आप सन्यास कब लेंगे ?

उ० : घर गृहस्थ से ऊबकर, मन हो जाय निराश,
जिनकी पत्नी मरखनी, वे लेते सन्यास।

महेश कुमार फेरवानी, इन्दौर

प्र० : दोस्त आंखें कब फेर लेते हैं ?

उ० : सत्कार सेवा से विमुख को होस्ट क्यों कहें,
जो आंख फेर ले, उसे हम दोस्त क्यों कहें।

पप्पू नारंग, मालवा मिल, इंदौर

प्र० : लड़कियां कौन से लड़कों से डरती हैं ?



उ० : गुण्डा टाइप छात्र से रिस्क न कोई लेय,
गुण्डी छात्रा मिले तो, अक्ल ठीक कर देय।

नरेन्द्र धीमान, फीरोजपुर छावनी

प्र० : नेता जनता की नजरों में कब गिर जाता है ?

उ० : अपना स्वास्थ्य साधकर, जनता को दे कष्ट,
भ्रष्ट आचरण करे जो, वह नेता हो नष्ट।

नरंग बाबू सिंधी, इन्दौर

प्र० : बुद्धिमान और मूर्ख में बहस हो जाए तो किसकी [जीत] होगी ?

उ० : अपनी ही कहता रहे, सुने न दूजे तर्क,
सभी तर्क हों व्यर्थ जब, मूरख करे कुतर्क।

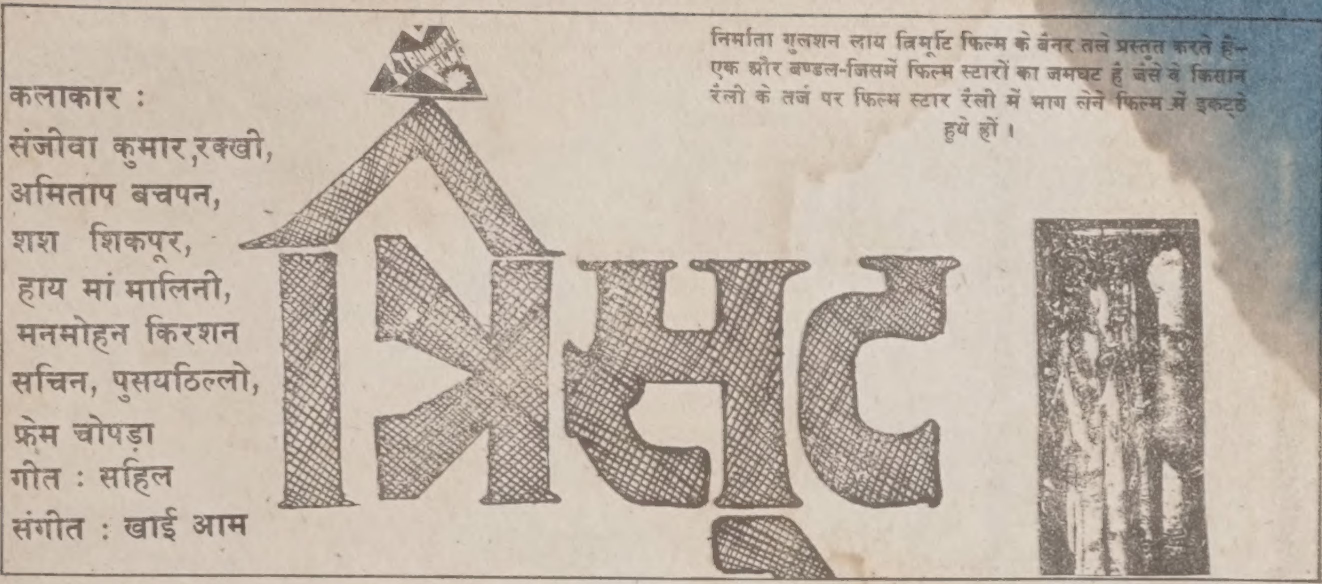
कु० रेवती राव, कोरबा (म० प्र०)

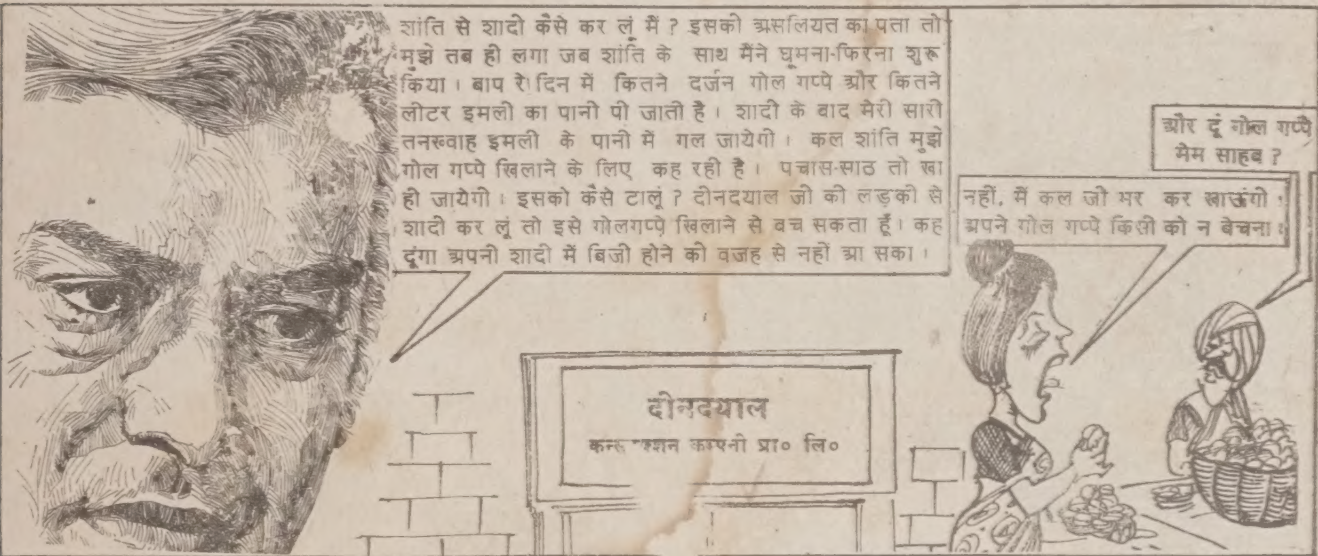
प्र० : किसी महापुरुष की मृत्यु हो जाय और उसी दि[न] जन्म दिवस हो तो खुशी मनाएंगे या रंज।

उ० : आधे दिन तक हँसेंगे, आधे दिन तक रोएं,
रंजोगम इस युक्ति से, दोउ बराबर होएं।

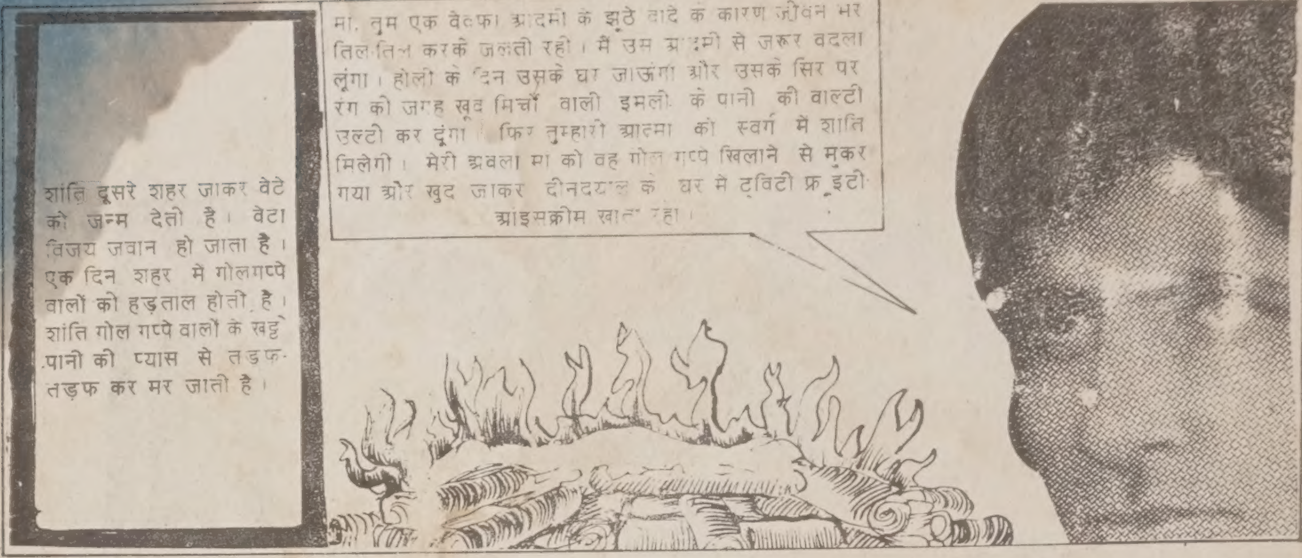
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कार[तूस]
दीवाना साप्ता[हिक]
८-बी, बहादुरशाह ज[फर मार्ग]
नई दिल्ली-११०


निर्माता गुलशन लाय त्रिमूर्टि फिल्म के बैनर तले प्रस्तुत करते हैं–
एक और बण्डल-जिसमें फिल्म स्टारों का जमघट है जैसे वे किसान रैली के तर्ज पर फिल्म स्टार रैली में भाग लेने फिल्म में इकट्ठे हुये हों।
कलाकार :
संजीवा कुमार, रक्खी,
अमिताप बचपन,
शश शिकपूर,
हाय मां मालिनी,
मनमोहन किरशन
सचिन, पुसयठिल्लो,
फ्रेम चोपड़ा
गीत : सहिल
संगीत : खाई आम
त्रिमूर्ट


शांति से शादी कैसे कर लूं मैं ? इसकी असलियत का पता तो मुझे तब ही लगा जब शांति के साथ मैंने घूमना-फिरना शुरू किया। बाप रे! दिन में कितने दर्जन गोल गप्पे और कितने लीटर इमली का पानी पी जाती है। शादी के बाद मेरी सारी तनख्वाह इमली के पानी में गल जायेगी। कल शांति मुझे गोल गप्पे खिलाने के लिए कह रही है। पचास-साठ तो खा ही जायेगी। इसको कैसे टालूं ? दीनदयाल जी की लड़की से शादी कर लूं तो इसे गोलगप्पे खिलाने से बच सकता हूँ। कह दूंगा अपनी शादी में बिजी होने की वजह से नहीं आ सका।
दीनदयाल
कन्स्ट्रक्शन कम्पनी प्रा० लि०
और दूं गोल गप्पे मैम साहब ?
नहीं, मैं कल जी भर कर खाऊंगी। अपने गोल गप्पे किसी को न बेचना।


यह क्या ? राज धोखा दे गया। मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। यह भी नहीं सोचा कि मैं उसके बच्चे की मां बनने वाली हूँ। खैर बच्चे की तो कोई बड़ी बात नहीं थी, वह शादी के बहाने गोल गप्पे खिलाने से मुकर गया। इस दुनिया में आग लग जाये। प्यार की इतनी तौहीन कभी नहीं हुयी होगी। प्रेमी-प्रेमिका को गोल गप्पे खिलाने के वादे से मुकर गया। खैर कोई बात नहीं, मैं भी देख लूंगी। अब इस शहर में मैं नहीं रहूंगी, किसी दूसरे शहर चली जाऊंगी। मेहनत मजदूरी करके संतान को पाल कर बड़ा करूंगी और उसे गोलगप्पे का रेहड़ी वाला बनाऊंगी। दुनिया में हम आये हैं तो जीना ही पड़ेगा, जीवन है इमली का पानी तो पीना ही पड़ेगा।


शांति दूसरे शहर जाकर वेटे को जन्म देती है। वेटा विजय जवान हो जाता है। एक दिन शहर में गोलगप्पे वालों की हड़ताल होती है। शांति गोल गप्पे वालों के खट्टे पानी की प्यास से तड़फ-तड़फ कर मर जाती है।
मां, तुम एक वेवफा आदमी के झूठे वादे के कारण जीवन भर तिल-तिल करके जलती रही। मैं उस आदमी से जरूर वदला लूंगा। होली के दिन उसके घर जाऊंगा और उसके सिर पर रंग की जगह खूब मिर्चों वाली इमली के पानी की वाल्टी उल्टी कर दूंगा। फिर तुम्हारी आत्मा को स्वर्ग में शान्ति मिलेगी। मेरी अवला मां को वह गोल गप्पे खिलाने से मुकर गया और खुद जाकर दीनदयाल के घर में टुविटी फ्रूइटी आइसक्रीम खाता रहा।


वदला लेने के लिए सवसे पहले मारपीट करना जरूरी है। मारपीट शुरू करते ही मैं एकदम से पैसों में लोटने लगूंगा। आप कहेंगे कि पैसे कमाना इतना आसान था तो मैं अव तक क्या भंग पीकर पड़ा रहा? इस वात का जवाव मेरे पास नहीं है। लेकिन इस स्टोरी के राइटर सलीम ज़ावेट यह भेद जानते हैं। अगले पैनल में वही आपको यह टॉप सीक्रेट वतायेंगे। इतनी देर में मैं मारपीट दंगा-फसाद कर लूं।


मैं सलीम-जावेट जोड़ी का जावेट हूं, आपने हमारी कई घासलेटी चकल्लस फिल्में देखी होंगी। उसमें फटीचर हाल का हीरो मारपीट करता है और मारपीट करते ही हैदरावाद नवाव जितना अमीर हो जाता है। यह कैसे मुमकिन है? सीधी सी बात है। हम दोनों की खुदा के साथ जान पहचान है। हम आते-जाते रहते हैं। हमने खुदा को इस बात के लिये पटा रखा है कि वह हमारी फिल्मों के हीरो की पीठ पर अमीरी बटन फिट करके पैदा करे—जैसे ही वह वटन दव जाता है, हीरो इतना अमीर हो जाता है कि स्टेट वैंक उसके सामने कंगाल लगने लगे। हम इसीलिये हीरो से मारपीट करवाते हैं ताकि वह ढिशू-ढिशू के दौरान पीठ के बल दीवार से जो टकराये। टकराते ही बटन दब जाता है और वह अमीर....
शांति कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन


जिस आदमी ने मेरी मां के साथ धोखा किया वह एक कंस्ट्रक्शन कम्पनी का मालिक है। मैं भी एक कंस्ट्रक्शन कम्पनी खोलूंगा और कम्पीटीशन में राजकुमार गुप्ता को वर्वाद कर दूंगा उसे पैसे-पैसे का मोहताज वना दूंगा।
बड़े भाई यह संभव है? ठेकेदारी और कंस्ट्रक्शन वर्क का तुम्हें कौड़ी का तजुर्बा नहीं है।
यह फिल्मी दुनिया है प्यारे, यहां रामपुर का लक्ष्मण शहर वालों की धुनाई कर सकता है। राजेन्द्र कुमार गाव हमारा शहर तुम्हारा में एक ही रील में धड़ाधड़ अंग्रेजी वोलना शुरू करता है, वारूद में ऋषिकपूर हेलीकाप्टर चला सकता है—आशिक हूं वहारों का में राजेश खन्ना गाने गा-गा कर अणु वैज्ञानिक वन जाता है तो मैं क्या एक ठेकेदार नहीं वन सकता?
हूं हूं
यह आजकल क्या हो रहा है? यह शांति कंस्ट्रक्शन कम्पनी कहां से पैदा हो गयी जो मेरा विजनैस खाये जा रही है? हमारा हर टैंडर एक रुपये की वजह से रद्द हो जाता है।
सर, यह फिल्मी कांट्रेक्टर है. सलीम-जावेद के वाप-दादे ने भी कभी ठेकेदारी नहीं की होगी। वर्ना उन्हें यह पता होता कि सरकार या प्राइवेट फर्में केवल एक रुपये के अन्तर की वजह से टेंडर मंजूर या नामंजूर नहीं करते। खास कर जब कि एक जमी-जमी विश्वस्त कम्पनी और नौसिखिया कम्पनी का मामला हो! इससे साफ पता लगता है कि सलीम व जावेद फिल्म लेखन में आने से पहले किसी ढावे में भांडे मांजते रहे होंगे। वहीं के टेंडर का उन्हें पता है।
डैडी आप सच-सच वताइये विनय कौन है? मुझे कुछ आपके अतीत के बारे में शक होने लगा है। आप सच-सच मुझे बताइये कि शादी से पहले क्या कोई लड़की आपके जीवन में आई थी। आपके उससे कितने गहरे ताल्लुक थे?
हां, मेरे जीवन मे शांति नाम की लड़की आई थी। उससे मेरे उतने ही गहरे ताल्लुक थे जितना गहरा गोलगप्पे वालों के इमली के घड़े की गहराई होती है। मैं उसका साथ नही निभा सका, क्योंकि वह गोलगप्पे की शौकीन थी और मुझे टुविटी-फ्रुइटी आइसक्रीम अच्छा लगता था।


गोल गप्पे खाकर बार-बार मांग कर इमली का पानी पीना औरतों का जन्म सिद्ध अधिकार है। जो पुरुष इस अधिकार को छीनने की कोशिश करता है, वह निर्दयी हैवान है। हम उसके साथ नहीं रहेंगे चाहे वह शख्स हमारा डैडी ही क्यों न हो।
हम उस घर में नहीं रह सकते जहां ऐसा आदमी हो जिसने प्रेमिका को गोल गप्पे न खिलाये हों।
नाऊ सी मैन, मैंने अपनी बीवी को इसी गोल गप्पों के द्वारा वस में किया। हैलन कैंडल को मैंने एक बार चौपाटी पर गोल गप्पे खिलाये। उसका इतना असर हुआ कि वह मुझसे शादी ही कर बैठी। उसे पता था कि इंगलैंड जाने पर गोल गप्पे व इमली का पानी नहीं मिलेगा।
मिस्टर राजकुमार गुप्ता, आज आपके पास कुछ नहीं है। कम्पनी मैंने खरीद ली है। आप मुझे नहीं जानते मैंने यह क्यों किया? मैं आपका ही बेटा हूं। मैं शांति का बेटा हूं। आप
शांति को भूल गये होंगे वह महान औरत थी जिसने मुझे पाल पोस कर बड़ा किया। और आपने उस गरीब औरत के साथ दगा किया। यही मेरा बदला है।
अबे गोल गप्पे की औलाद, मैंने इसीलिये तो शांति से शादी नहीं की कि मुझे पता था उससे जो लड़का पैदा होगा उसकी खोपड़ी में भेजे की जगह इमली का पानी भरा होगा, आज यह बात साफ साबित हो गयी! बेवकूफ, तू कम्पनी का मालिक बन गया और मैं तेरा नौकर तो तूने यह समझ लिया कि तू बाजी मार ले गया? आगे-आगे तुझे पता लगेगा।
बेवकूफ इमली के पानी की औलाद, तुझे यह नहीं पता लगा कि कम्पनी मालिकों का जमाना लद गया है। कम्पनी मालिकों के नौकर अब छाती पर मूंग दलते है। फैक्टरियों को आग लगा देते हैं। मजदूरों की मांगों से डर कर तुझे दिन रात इसी तरह टेबल के नीचे चूहे की तरह छिपा रहना पड़ेगा। तुझे यह तो नजर आ ही गया होगा कि जब से तू कम्पनी का मालिक बना और मैं नौकर तो तेरे बाल सफेद होने शुरू हो गये और
मेरे बाल सफेद से काले होने लग गये। अब तू मुझसे क्या बदला लेगा? मैं तुझसे बदला लूंगा, तू टेबलों के नीचे चोरों की तरह लुकता फिरेगा, मैं तेरा जीना हराम कर दूंगा।
विजय
मैनेजिंग डायरेक्टर
हमें ४०% बोनस दो
हमारा महंगाई भत्ता बढ़ाओ

आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

अशोक कुमार मोंगा—फरीदकोट : बर्तन मिट्टी से चमकाये जाते हैं तो किस्मत किस चीज से चमकाई जाती है ?

उ० : बर्तन मिट्टी से चमकाये जाते होंगे पर किस्मत तो आजकल लोगों को मिट्टी में मिला रही है। चमकी किस्मत वाले बड़े-बड़े नेता जो आप ऊंची कुर्सियों से लुढ़क कर नीचे गिर रहे हैं वे यह बताते ही नहीं कि उन्होंने अपनी किस्मत किस 'रगड़े' से चमकाई थी।

ओमप्रकाश कमल—फिरोजपुर छावनी : ऐसा क्यों कहते हैं अंकल ?

बचपन खेल में खोया,
जवानी नींद भर सोया,
बुढ़ापा देख कर रोया।

उ० : जो भी ऐसा कहते हैं, हम कहते हैं वे गलत ही कहते हैं। हम तो इस बात को यूं कहेंगे :

पिया जो दूध बचपन में,
बना उस दूध का खोया।
न थी फुर्सत जवानी में,
न यह सोई न वह सोया।
जो रोया अब बुढ़ापे में,
तो यह है आंख का 'रोया'

रामअवतार—हाथरस : हमारे घर के पास एक गर्ल्ज होस्टल है। क्या आप बच्चा झमूरे को इन लड़कियों से मित्रता के लिए हाथरस भेज सकते हैं ?

उ० : काका हाथरसी बच्चा झमूरे को अपने साथ हाथरस ले जा रहे थे तो हमने उन्हें रोक दिया था। क्योंकि यहां तो हम उसको और बालों को बचा लेते हैं। पर हमें पता है कि उसकी और उसके बालों में रहने वालों की पिटाई 'हाथरस' में हुई तो आवाज 'कानपुर' तक जाएगी।

एक पाठक, जिसने न अपना नाम लिखा न शहर का नाम : चाचा जी, हमने भविष्य का इतिहास उल्टा तो देखा, उसमें आपको शायरी का प्रथम पुरस्कार मिला है। यह क्या राज है ?

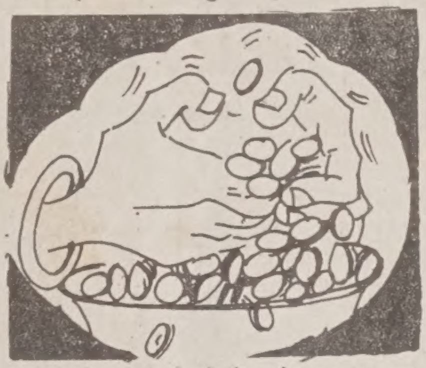
उ० : इसका राज है ऐसे शेर, जो हम आप की याद में कहते हैं :

गुजरी है कैसे रात, चटाई से पूछ लो,
आँसू पड़े हैं जिस पे तड़ातड़ तमाम रात।
हम सा तुझे जो याद करे मिल नहीं सकता,
बेले हैं तेरी याद में पापड़ तमाम रात।

देवी दयाल सेठी—फरीदकोट : चाचा जी, क्या आपके जमाने में भी लड़कियां सैंडिल पहनती थी ? जरा सोचिये मैंने आपकी सूरत में क्या कमाल देखकर यह प्रश्न पूछा है।

उ० : एक की सूरत से दूसरे का क्या सम्बन्ध है यह कोई विश्वास से कैसे जान सकता है ? क्या आप ताजमहल देखकर यह बता सकते हैं कि मुमताज महल सैंडिल पहनती थी। या कोई डालडा का खाली पीपा किसी ट्रक के पहिये के नीचे आ जाए तो क्या आप पूछेंगे कि ट्रक ने सैंडल पहन रखे थे। ऐसे ही आप हमारी सूरत देखकर उस जमाने की बात कैसे पूछ रहे हैं ?

पवन कुमार अग्रवाल—गांधीधाम : चाचा जी, लोग कहते हैं कि दुनिया में प्यार और ममता ही सब कुछ है। पर मैं कहता हूं, रुपया ही सब कुछ है। जिसके पास रुपया पैसा नहीं उसके पास कुछ नहीं ?



उ० : लोग झूठ बोलते हैं और आप सच कहते हैं। पर वह बात केवल छोटे से एक रुपये की है। आपकी जेब में दीवाना के मनोरंजन टैक्स का एक रुपया हो तो फिर देखिए हम कितने प्यार से और ममता से आपके सर पर हाथ फेरते हैं और कमाल यह होगा कि जब सर पर हाथ फिरेगा, जेब पर झाड़ू फिर जायेगी।

विजय करंडे—राजनांद गांव : चाचा जी, आप प्रश्नों के उत्तर ही देते हैं या कुछ और भी करते हैं ?

उ० : प्रश्नों के उत्तर देने के बाद क्या आप समझते हैं कि हममें इतनी जान बचती होगी कि हम कुछ और कर सकें ?

अशोक जौहर गगन—देहरादून : नसबन्दी की लाल तिकोन कारण बनी यह सरकार जाने की। और नशाबन्दी······?

उ० : की हरी झंडी कारण बनेगी यह सरकार जाने की।

आलोक गुप्ता—कानपुर : क्या भारत में कभी दूध की नदियां बहने की सम्भावना है ?

उ० : दिल्ली का तो हमें पता है। यहां ओखले के वाटर वर्क्स से नाली का सड़ा पानी मिल रहा है हमें पीने को। आप दूध की नदियों की बात कर रहे हैं। और सच पूछिये तो एक हिसाब से दूध की नदियां अब भी बह रही हैं। पिछले दिनों हमारा दूध वाला दूध देकर गया तो हम उसमें मैंढ़क देख कर दंग रह गये। शिकायत करने पर उसने बताया। 'क्या करूं बाबूजी, अजीब बेईमानी का जमाना आ गया। कुंए से पानी खींचने के लिए आजकल जो रस्सी मिलती है, वह दो दिन भी नहीं चलती। इसलिये दूध में नदी का पानी डालना पड़ता है।'

प्रीतम सिंह चौहान—जयपुर : हमारे यहां किसी चीज की कमी नहीं। कालेज है, गर्ल्ज होस्टल है, गर्ल्ज हैं और मैं हूं। बस एक चीज की कमी है। क्या आप उस कमी को पूरा करने के लिये बच्चा झमूरे के ढ़ाई सौ ग्राम बाल मुझे भिजवा सकते हैं ?

उ० : वह तो हम भिजवा देंगे। पर एक कमी शायद फिर भी रह जाएगी। इन बालों से अपनी आंखों को अंधा करके आप जिस सड़क पर दौड़ लगायेंगे क्या वहां काफी संख्या में कूएं हैं ?

कूपन

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

बन्द करो बकवास


न मानूं, न मानूं, न मानूं रे, दगाबाज तोरी बतियां न मानूं रे।
बन्द करो बकवास, सब्जी का हिसाब लेनें के बाद आप हमेशा यही गाना गाती हो। बीबी जी, हम पर विश्वास नहीं तो हम यह नौकरी छोड़ देंगे।
ढूंढो-ढूंढो रे साजना, ढूंढो रे बालमा मोरे कान का बाला।
बन्द करो बकवास, इस बार तो ऐसे बाले लाया हूं कि न खोयेंगे न ढूंढने पड़ेंगे।
THE NATIVE
दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे...
बन्द करो बकवास, दो हंसों का जोड़ा नहीं मेरी कमीजें गिर पड़ी हैं।

धारावाहिक उपन्यास

दूसरी आत्मा

भाग ६

लेखक-संगीता

दशरथ को बम्बई में एक कम्पनी में इंजीनियर की नौकरी मिली थी। उसे रहने के लिये कम्पनी के मैनेजर ने अपनी कोठी 'रचना सदन' बहुत ही थोड़े किराये पर दे दी थी। वह कोठी वर्षों से खाली पड़ी थी। पास-पड़ौस के लोगों का कहना था कि उसमें कोई प्रेतात्मा रहती है जो रात को सिसकियां भरती है और दशरथ-दशरथ पुकारती है। इस डर से उस कोठी में कोई नहीं आता था।

जब दशरथ कोठी में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसे भी प्रेतात्मा वाली बात बताई। लेकिन दशरथ हिम्मत करके उसमें रहने लगा। दशरथ ने जैसे ही अपना सामान रखा एक लड़की वहां आई और उसने बताया कि मुझे मेरी बहन ने जो मैनेजर साहब के यहां काम करती है, आपके यहां घर का काम करने के लिये भेजा है। उसने वर्षों से गन्दी पड़ी कोठी को मिन्टों में साफ कर दिया तो दशरथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह प्रेतात्मा दशरथ के सामने आई और उसे पिछले जन्म की कहानी सुनाने लगी।

आगे पढ़िये

'और क्या ? अभी कोई मुझसे अच्छी, अमीर लड़की मिल गई तो उसे अपना लोगे ?'

'रानी ! ऐसा कह कर मेरे प्यार का अपमान मत करो—भगवान जानता है कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं—अगर स्वर्ग की अप्सरा भी धरती पर उतर आए तो वह भी तुम्हारा स्थान नहीं ले सकती।'

'सच कह रहे हो दशरथ ?'

'हां—रानी।'

'और अगर कोई बलपूर्वक तुमको मुझसे अलग करने का प्रयत्न करेगा तो—?'

'रानी ! दुनिया की कोई भी शक्ति हमें एक-दूसरे से अलग नहीं कर सकती सिवा मौत के—भगवान न करे मुझे तुमसे किसी ने अलग किया या तुम्हें मुझसे छीन लिया गया तो मैं अपने प्राण दे दूंगा।'

'नहीं नहीं दशरथ' रानी ने झट दशरथ के मुंह पर हाथ रख दिया और बोली, 'भगवान के लिए ऐसा न कहो—भगवान न करें तुम्हें कुछ हो गया तो क्या मैं जिन्दा रह सकूंगी ?'

दशरथ ने रानी को सीने से लगा कर भींच लिया—रानी ने कहा—

'लेकिन हम इस प्रकार छिप-छिप कर कब तक मिलते रहेंगे ?'

'बस कुछ दिनों की बात है रानी—इधर मैंने एम० ए० फाईनल किया और हम दोनों एक हो गये।'

'लेकिन एम० ए० की परीक्षा में भी अभी चार महीने हैं।'

'तो क्या हुआ रानी ? चार महीने यूं पलक झपकने में बीत जाते हैं।'

'नहीं दशरथ, तुम्हारे लिए चार महीने पलक झपकने में समाप्त हो जाएंगे—लेकिन मेरे लिए तो यह चार शताब्दियां बन जाएंगी—यह भी तो हो सकता है कि इन चार महीनों के बीच ही मुझे तुमसे सदा के लिए छीन लिया जाए।'

'क्यों ?' दशरथ ने चौंक कर पूछा।

'तुम नहीं जानते दशरथ, मेरे पिता जी ने मेरी शादी की बात एक अधेड़ आयु के आदमी से कर रखी है—उसकी पत्नी मरे हुए दस बरस हो गए—और वह केवल मुझे पाने के लिए पिताजी को कई हजार रुपये ऋण के रूप में दे चुका है।'

'ओह ! यह बात तुमने पहले तो कभी नहीं बताई थी ?'

पहले मुझे विश्वास नहीं था कि पिताजी उस बुड्ढे के हाथों मुझे इस प्रकार बेचने के लिए सहमत हो जाएंगे—लेकिन मुझे कल की पिताजी की बातों से पता चला है कि उनका निश्चय दृढ़ है।'

'अब क्या होगा ?'

'अब तो एक ही उपाय रह जाता है।'

'वह क्या ?'

'मेरे साथ किसी मन्दिर में चल कर शादी कर लो—चाहे अभी किसी पर स्पष्ट न करो—फिर जब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो जाए तो हम पक्की शादी कर लेंगे।'

'और इस बीच तुम्हारे पिता ने अपना वचन पूरा कर दिया तो ?'

'इसीलिए तो मैं तुमसे गुप्त रूप में शादी करना चाहती हूं···अगर पिता जी ने शादी पर बल दिया तो मैं बता दूंगी मैं शादी कर चुकी हूं।'

'ठीक है रानी···तुम्हारे लिए मैं यह भी करने को तैयार हूं।'

'तो फिर चलो—हम लोग आज ही किसी मन्दिर में चलते हैं।'

'आज ही ?' दशरथ ने कहा, 'जानती हो क्या समय हुआ है ?'

'क्या ?'

'पूरे पौने दो बजे हैं—।'

'ओह—!'

'अब तुम स्वयं सोचो···अगर हम दोनों शादी कर लेंगे तो क्या मैं तुम्हें एक-आध घण्टे में ही जाने दूंगा ?' कहते-कहते दशरथ ने रानी को लिपटा लिया और रानी शर्माकर बोली—

'हटो—शरारती कहीं के—।'

'लो हट गया।'

दशरथ हंस कर अलग हो गया और बोला—

'अच्छा ऐसा करते हैं—कल मैं भी बहाना कर दूंगा कि परीक्षा समीप है मैं किसी दोस्त के यहां स्टडी करूंगा और तुम भी किसी सहेली के यहां स्टडी करने का बहाना बना कर चली आना—हम दोनों ठीक नौ बजे शिवजी के मन्दिर के पास मिलेंगे—और फिर···।'

दशरथ ने जान-बूझ कर वाक्य अधूरा छोड़ दिया—रानी ने लज्जा कर कहा—

'सचमुच तुम बहुत नटखट हो।'

'यह नटखटपन तो हर पति का अधिकार होता है।'

'लेकिन···शादी के बाद क्या जरूरी है कि ऐसा हो भी—क्या तुम परीक्षा तक धैर्य नहीं कर सकते ?'

'मेरी रानी···शादी के बाद किससे धैर्य होता है ?'

'और कोई गड़बड़ वाली बात हो गई तो ?'

'कैसी गड़बड़ ?'

'म···म···मतलब यह कि ब···ब··· बच्चा···बच्चा ।'

'तो क्या हुआ ? हम कह देंगे कि हमारी शादी हो गई है ।'

'अच्छा···तो कल नौ बजे शिवजी के मन्दिर के पास मिलेंगे ।'

'बिल्कुल मिलेंगे ।'

'अब मैं चलूं···? पिताजी राह देख रहे होंगे ।'

'जाओगी ?'

'तुम कहो तो बिल्कुल न जाऊं ।'

दशरथ ने रानी को लिपटा कर उसके होंठ चूम लिए···और रानी अपने आपको छुड़ा कर हंसती हुई अंधेरे में भागती चली गई । दशरथ ठण्डी सास लेकर अंधेरे में खड़ा रह गया ।

रानी बाग का लम्बा रास्ता पार करके फाटक के पास पहुंची । अचानक एक हाथ उसके मुंह पर आकर रुक गया और दूसरे हाथ ने रानी को पकड़ कर खींच लिया । रानी की चीख गले ही में घुट कर रह गई । उसका बदन थर-थर कांप रहा था और वह अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न कर रही थी···फिर किसी ने धीरे से उसके कान में कहा—

'आवाज निकली तो इसका परिणाम तुम जानती हो—शायद तुम मेरी आवाज से मुझे पहचान गई होगी—न पहचाना हो तो मैं अपना नाम भी बता दूं—मैं हूं राकेश—।'

फिर राकेश ने धीरे से रानी के मुंह पर से हाथ हटा दिया और रानी थर-थर कांपती हुई बोली—

'यह क्या अशिष्टता है ?'

'अशिष्टता !' राकेश धीरे से हंसा, 'यह तो दिल्लगी है ।'

'गधे हो तुम···' रानी झल्ला कर बोली, 'यह भी दिल्लगी का समय है ? तुम्हें मालूम नहीं किससे मिलने के लिए अब तक यहाँ थी ?'

'मालूम है—' राकेश हंस कर धीरे से बोला, 'अपने आशिक दशरथ से मिलने के लिए ।'

'और फिर भी तुम यहाँ आ गए हो' रानी दाँत किलकिला कर बोली, 'अगर उसे सन्देह भी हो जाए तो ?—'

'कैसे सन्देह होगा—वह इधर थोड़े ही आएगा ।'

'बक-बक मत करो···मैंने बड़ी मुश्किल से तो उसे कल शादी करने पर सहमत किया है ।'

-'अच्छा···।' राकेश खुश होकर बोला, 'तो वह कल तुमसे शादी कर रहा है ?'

'हाँ—कल हम दोनों मन्दिर में जाकर शादी करेंगे—ठीक नौ बजे रात को··· और···'

इसलिए यह सब तो तुम्हें सहन करना ही पड़ेगा ।' रानी ने कहा, 'यह बात तो तुम्हें उस समय सोचनी चाहिए थी जब तुमने इस काम के लिए मुझे चुना था···मुझे स्टूडेंट बना कर दशरथ के ही कालिज में दाखिला दिलवाया था ताकि मैं धीरे-धीरे दशरथ को अपने प्यार के जाल में फांस कर उसे शादी के लिए सहमत कर सकूं ।'

'मैंने केवल शादी को कहा था—वह भी इसलिए कि दशरथ की शक्ल सूरत बिल्कुल महारानी चमनपुर के खोए हुए बेटे ही के समान है—दशरथ के पिता को मैं जानता हूं वह कितना लोभी है—अगर उसे पांच लाख का ही लालच दे दिया जाए तो वह दशरथ को अपना बेटा स्वीकार करने से इन्कार कर देगा और कह देगा कि उसे



'और क्या ?' राकेश ने बेचैनी से पूछा ।

'और इसके बाद वह मूर्ख मुझसे सुहाग रात भी मनाना चाहता है ।'

'अच्छा—?' राकेश उछल पड़ा, 'तो क्या तुम उसके साथ सुहाग रात मनाओगी ?'

'क्या हानि है ?' रानी मुस्करा कर बोली, 'अगर एकाध बार सुहागरात मना भी ली जाए तो इसमें तुम्हारी क्या हानि है ?'

'देखो रानी···मेरा दिल मत जलाओ,' राकेश बुरा-सा मुंह बना कर बोला, 'तुम जानती हो कि मैं यह सब सहन नहीं कर सकता ।'

'ओहो···पूरे पचास लाख की बात है···

दशरथ अमुक स्थान पर यमुना में बहता हुआ मिला था । उसने दशरथ को बचा लिया—और दशरथ जब होश में आया तो वह अपनी स्मृति खो चुका था···अब वह ज्वाला प्रसाद ही को अपना पिता समझता है ।'

'और महारानी चमनपुर को दशरथ की खबर देने से पहले तुम यह चाहते हो कि दशरथ से शादी कर लूं ताकि जब दशरथ महारानी का पचास लाख का उत्तराधिकारी बन जाए तो फिर मैं उसे धीरे-धीरे विष देकर मार डालूं और मैं और तुम ऐश करें ।'

'धीरे-धीरे नहीं···तुरन्त···सुहागरात में ।'

'लेकिन डार्लिंग···सुहागरात तो वह कल ही मनाना चाहता है ।'

'बकवास मत करो'''शादी जरूर कर लो लेकिन उससे कह दो कि सुहागरात तब तक नहीं होगी जब तक कि रीति के अनुसार समाज के सामने विवाह नहीं हो जाता।'

'और अगर उसे सन्देह हो गया तो।'

'क्यों बकवास करती हो?' राकेश फिर झुंझला गया, उसे सन्देह तब होगा जब तुम चाहोगी वरना सन्देह का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि तुम बहुत कुशल अभिनेत्री हो।'

'अच्छा बाबा।' रानी ठंडी सांस लेकर मुस्कराई, 'मैं प्रयत्न करूंगी कि वह कल केवल शादी कर ले किन्तु सुहागरात न मनाए।'

'प्रयत्न नहीं—वचन दो।'

रानी धीरे से हंस पड़ी और बोली—

'अच्छा, मैं वचन देती हूं कि दशरथ के साथ सुहागरात नहीं मनाऊंगी।'

'रानी—।'

राकेश ने रानी को पकड़ कर सीने से लिपटा लिया।

☐ दशरथ बड़ा खुश-खुश गुनगुनाता हुआ अपने घर के पास पहुंचा तो किवाड़ पर दस्तक देते-देते वह ठिठक कर रुक गया क्योंकि अन्दर बत्ती जल रही थी और बापू की आवाज भी आ रही थी। दशरथ का दिल जोर से धड़क उठा'''वह होंठों में बड़बड़ाया—

'हे भगवान? कुशल हो।'

फिर उसने धीरे से दस्तक दी और अन्दर एकाएक सन्नाटा छा गया। अब के दशरथ ने जोर से दस्तक दी। अन्दर से कौशल्या की आवाज आई—

'कौन है?'

'मां—मैं हूं।'

'अरे दशरथ है—खोलो जल्दी से।'

यह ज्वाला प्रसाद की आवाज थी''' फिर दरवाजा खुल गया दशरथ जैसे ही अन्दर प्रविष्ट हुआ कौशल्या ने चटाक से उसकी बलाएं ले लीं और बड़ी प्रसन्नता से बोली—

'आ गया मेरे लाल—हम सब कितनी बेचैनी से तेरी राह देख रहे थे।'

'भैया'''।'

'मेरे अच्छे भै'

'भैया जी'''।'

तीनों बहनें दशरथ से लिपट गईं''' दशरथ भौंचक्का-सा रह गया'''सबके चेहरे प्रसन्नता से खिले पड़ रहे थे'''ज्वाला प्रसाद विशेष रूप से बहुत प्रसन्न थे—उन्होंने मुस्कराकर पूछा—

'क्यों बेटा'''इतनी देर कैसे लग गई?'

'वह—बापू ड्रामा था आज कालिज में।'

'तो अब समाप्त हुआ है ड्रामा?'

'जी—हां'''कपड़े बदलने'''मेकअप उतारने में थोड़ी देर हो गई है।'

'सुना है तुम हीरो का रोल कर रहे थे?'

'जी हां—।'

सीता ने जल्दी से पूछा—

'तुम्हारा पार्ट कैसा रहा भैया?'

'सबको बहुत अच्छा लगा।'

'अरे मेरे भैया ने क्या बुरा पार्ट किया होगा?' लाजो जल्दी से बोली।

'अरे मेरा बेटा तो देखने ही से हीरो लगता है।' कौशल्या ने प्यार से उसे देखते हुए कहा।

'मां'''' चुन्नी जल्दी से बोली, 'भैया शक्ल से बिल्कुल किसी राज्य के राजकुमार लगते हैं।'

'और बहुत बड़े ऐक्टर'''जैसे सहगल''' कुमार'''पृथ्वीराज'''।'

'हां-हां पृथ्वीराज'''।'

दशरथ आश्चर्यचकित-सा हंस पड़ा और बोला—

'लेकिन बात क्या है? आप लोग इतनी रात तक जाग क्यों रहे हैं?'

'तुम्हारी ही प्रतीक्षा में जाग रहे थे।' चुन्नी ने कहा।

'मेरी प्रतीक्षा? भला क्यों?'

चुन्नी ने लाजो और सीता की ओर देखकर कहा—

'बता दूं दीदी—

'अरे—अभी नहीं।' लाजो ने जल्दी से कहा।

'और क्या'''इतनी बड़ी खुशखबरी इतनी आसानी से बता देगी।'

'पहले मुंह तो मीठा कराएं भैया।'

दशरथ ने उन सबको आश्चर्य से देखा और बोला—

'आखिर ऐसी क्या बात है कि मुंह मीठा कराऊं?

'अरे बात ही ऐसी है।'

'कुछ बताओ तो सही।'

'बूझो तो जानें।"

कौशल्या ने जल्दी से कहा—

"क्यों परेशान करते हो मेरे लाल को—थका मांदा तो आया है कालिज से।"

"अरे हम तो आज सारी रात नहीं सोने देंगे।"

"अच्छा बक-बक मत करो।"

"मां! आखिर बात क्या है?"

"अपने बापू से पूछो बेटा।"

"बापू! क्या बात है?"

"अपनी मां से ही पूछो भाई।"

"मां कहती है बापू से पूछो, बापू कहते हैं मां से पूछो, बहनें बताने को तैयार नहीं'''भला फिर मुझे पता कैसे चलेगा?"

ज्वाला प्रसाद हंस पड़े और बोले—

"बता दो भई बता दो—बहुत परेशान कर लिया।'

"मैं बताऊं?" चुन्नी जल्दी से बोली।

"नहीं—मैं बताऊंगी।" लाजो ने कहा।

"नहीं मैं बताऊंगी'''मैं सबसे बड़ी हूं'''पहले मेरा अधिकार है।"

दशरथ ने सिर पीटकर कहा—

"अरे बाबा कोई बताओ—लेकिन बताओ तो सही।"

तीनों बहनें, कौशल्या और बापू हंस पड़े। सीता ने कहा—

"बात है शादी की'''।"

"शादी?" दशरथ उछल पड़ा, 'किसकी शादी?"

"हटो भैया'''शरारती कहीं के'''"

सीता शर्मा गई।

"तो क्या लाजो या चुन्नी की शादी लगी है कहीं?"

"नहीं बेटा—तेरी शादी'''" कौशल्या ने मुस्कराकर कहा।

"मेरी शादी—!!"

दशरथ के मस्तिष्क को झटका-सा लगा और उसका चेहरा सफेद पड़ गया। ज्वाला प्रसाद ने प्रसन्न मुद्रा में कहा—

"हां बेटा—तेरी शादी'''।"

"म'''म'''मगर—मैं तो अभी'''।"

"तू परीक्षा के बाद शादी करना चाहता है ना?"

"हां बापू'''प'''प'''पहला परीक्षा से पहले मैं शादी कैसे कर सकता हूं।"

((शेष आगामी अंक में))



राम-राम जी, राम-राम राम।
भाई जी राम-राम, ... बाद आपने दर्शन दिये ! ... तो गाम मां जाके ... कांटा ... गिये।
मनै तो तू मोट्टा-ताजा कट्टा जैसा दीख रहया है। नजर तो आता नहीं कि तू कांटा हो गया है।
काटे की बात कर रहया है
लो भाई जी, थम गाम जाके खूब मजाक करने लगे हो।
मैं सच कह रिया हूं भाई तू खूब मोटा ताजा हो गया है।
भाई जी, थमने मेरा दिल तोड़ दिया। थम ऊपर की चर्बी देख के धोखा खा रिहे हो। अन्दर एक्सरे करा के मेरा दिल देखो, थारे बिना मछली की तरह तड़फ-तड़फ के प्राण छोड़ने को तैयार था। हड्डी के अन्दर का तमा सूख के उड़ गया।
अपनी जासूस कम्पनी के क्या हाल हैं ? काम ठीक चल रिया है ?
जैसा नाम वैसा काम ! फशकिलास काम चल रिया है। मैं हफ्ते में एक बार जाता था दफ्तर, बाकी रूबी सम्भालती है दफ्तर। गाम के हालचाल बताओ भाई जी। भैंस, बकरी सब ठीक हैं ? फसल पतली है कि घनी ? अच्छा नहीं, पहला यह लिपटन की चाय पियो।
गाम के हाल बाद में बताऊंगा पहले यहां के हाल तो सुनाओ।
पिलपिल आज चौधरी चरणसिंह जैसा लग रिया है।
यहा के हालचाल ठीक नहीं हैं, भाई जी म्हारे किसानों के नेता चौधरी चरणसिंह जी को गृहमंत्री पद से हटा दिया गया है। यह सब कांग्रेसियों की चालाकी और सरारत से हुआ है ! उस दिन मुझे तो बोत गुस्सा आया, मने खाना भी नहीं खाया।
रोष तो गाम मा भी बोत फैला था। म्हारे नेता को हटा कर जनता पार्टी अपने पैरों पर खुद खडारी मार रही है। चौधरी साहब के बगैर यह अमृतसर से बंगाल तक एक भी सीट नहीं जीत सकते थे। अब मोरार जी देसाई ने हम किसानों की गैरत को ललकारा है। चौधरी देवीलाल म्हारे गाम आया था। वह भी फूट-फूट के रोये, सारा गाम री पड़या मेरे भाई।
अच्छा !



तुम सहर के दीवाना पढ़ने वाले आदमी भी गद्दार हो! हम इतने बेवकूफ नहीं हैं जितने दिखाई देते हैं। थम लोग हमें और म्हारे नेता राजनरैन और चौधरी साहब को मजाक समझते हो। चोरी-चोरी पीठ पीछे म्हारी बुराई करते हो। ठीक है हम सब जानते हैं मेरे भाई अच्छी तरह। थमारा बस चले तो
म्हारी पीठ में भी छुरा घोंप दोगे। लेकिन-लेकिन याद रखना अब किसान जाग गये हैं। हिन्दुस्तान की आबादी का ७०% किसान जब दिल्ली आकर हमला बोलेगा तब थमारा आंख खुलेगा। थम भी पूंजीवाद और कांग्रेस के गुर्गे हो। १९७७ की जनक्रांति के फेल करने की साजिश में तुम भी हो।
मैं एक-एक दीवाना पढ़ने वाले का चेहरा नोट कर रहा हूँ। वक्त आने पर हम जवाब देंगे।
चक्कू चल जायेंगे मेरे भाई। तू कहां सोया पड़ा है?
यहां तक कि हमारे जन-जन के नायक श्री राजनारायण को थम जोकर समझते हो। कई लोगों ने राजनरैन जी को बन्दर कहने में भी हिचक नहीं दिखाई।
यह नहीं सोचा कि बन्दरों की तुलना राजनारायण से करने पर बन्दरों की कितनी बेइज्जती होती है। हम सब बन्दर थम पर मान हानि का दावा करेंगे।
तू हंस रहया है भाई! उ किसानों की विशाल रैली बोट क्लब पर आकर अपने नारों से सारी दिल्ली को कंपा देगी तब तुझे पता लगेगा। हा किसानों की शक्ति को तू नहीं पहचानता। उस दिन पता लगेगा
दिल्ली चलो! अन्याय, साजिश और भ्रष्टाचार का जबाव मांगो। जनतन्त्र के मसीहा, नयी जनक्रांति के अगुआ जन नेता श्री चौधरी चरणसिंह एवं श्री राजनारायण की गांधी वादी नीतियों को पुनर्स्थापित करने तथा अपने साथ हो रहे अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने के लिये बोट क्लब पर लाखों की तादाद में पहुंचो।
चौधरी चरणसिंह अमर रहे।
दिल्ली चलो
साजिश एवं भ्रष्टाचार का
जवाब मांगो
देश के गरीब
भ्रष्टाचार से
जनतंत्र के नायक बढ़ते जाना.
तेरे साथ हैं सारा जमाना.



कह दे भाड़ में जाये जासूस कम्पनी । हमारे मुख्यमंत्री चौधरी देवीलाल ने कहा है कि वह पहले किसान हैं बाद में मुख्यमंत्री, उसी तरियाँ हम भी पहले किसान हैं बाद में जासूस । आज किसानों पर भारी विपत्ति आयी है ।
भाई जी, मेरे से अन्याय नहीं देखा जाता, नहीं देखा जाता ! कई बार सोचता हूं कि मोरार जी की कोठी के सामने भूख हड़ताल कर दूं—पूरा आमरण अनशन ! या तो म्हारे चौधरी साहब ।
वृद्ध यह अनशन का समय नहीं है। मैं गाम से शक्कर और देसी घी ल्याया हूं पहले चावलों के साथ उनको खाना है । यही तो है किसान का मन भाता खाना ।



घी शक्कर ओर चावल की बात ओर है । घी ओर शक्कर का नाम सुनते हो मेरा आधा गुस्सा काफूर हो गया ! भई, आपने खेत की पैदावार जो हुयी न !
वाह, थाली मां चावलों की ढेरी जैसे वर्फ से ढंको पहाड़ की चोट्टी होव्वे ओर सन-सन करके देसी घी की खुश्बू तर चलती हवा ओर नीचे सक्कर, ऐसे जैसे चांदनी छिडकी हुई हो । दुनिया का सबसे हसीन नजारा है ।
घी-शक्कर चावल डिनर
CHOMP!
CHOMP!
एक प्लेट चावल ओर खाले मेरे भाई ।
कोई बात नहीं । जाट का बच्चा डट कर शक्कर चावल नहीं खायेगा तो ओर कौन खायेगा ? यह तो म्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है । तने घी-सक्कर खाये दिन भी तो बीत हो गये थे ।
नही भाई जी, इब तो गले तक आ गया खाना । खचनोल खाने की जगे भी नहीं रही । पेट गुब्बारे की तरह हो गया है ।
भाई जी, मेरा बिस्तरा किधर है ? मेरे से खड़या भी नहीं रहा जाता । जभी म्हारे बुजुर्ग कह गये कि भरे पेट का नसा सबसे जोरदार होता है ।
चौधरी साहब बेडरूम इधर है ।
सिलबिल का पेट दो दिन से इसी तरह है । बेचारा कराहता रहता है । लगता इसकी अंतड़ियों का ट्रैफिक जैम हो गया है । डाक्टर को टेलीफोन करके बुलाना चाहिए ।
कहीं निगम बोध घाट की बुकिंग न करानी पड़े ।
फोन कर दिया साहब ! डाक्टर साहब पन्द्रह मिनट के अन्दर यहां पहुंचेंगे ।
आज किसान रैली है ओर हम आज ही नहीं जा पायेंगे । यह कम्बख्त ऐसे वक्त पर नाजुक बीमार पड़ा कि हम अपने नेता के हौंसले बुलन्द करने न जा सके ।
वेरी स्ट्रेन्ज ! लड़ाई के दिनों में आर्मी मेडीकल कोर में जब था तो मैंने मोर्स कोड का कोर्स किया था । इस आदमी के पेट से जो गुड़-गुड़ की आवाज आ रही है । वह ऐसे लगता है जैसे मोर्स कोड में संदेश हों 'चौधरी चरण सिंह जिन्दाबाद ! किसानों के नायक चरणसिंह ओर राजनारायण !"
गुड़ गुड़ गुड़ गुड़
गुड़ पुड़ पुड़ पुड़
गुड़ पुड़ गुड़ पुड़
गुड़ पुड़ गुड़ गुड़
मोर्स कोड

आपके पत्र

मैं दीवाना का वैसे अब पुराना ही पाठक बन चुका हूं। चिल्ली लीला, पंचतंत्र, सवाल यह है के कारनामे पढ़ कर ही दीवाना का हक अदा हो जाता है। दीवाना का नया अंक २३ पढ़ा तो बेहद खुशी हुई क्योंकि इसमें सभी स्तम्भ हंसाने योग्य थे। फिल्मी शतरंज के खंडारी, विज्ञापन अत्यन्त रोचक लगा। लेखक इन्दु जैन व फिक्र तौंसवी को मेरी तरफ से बधाई। इसी प्रकार की मनोरंजक कहानियां प्रकाशित करें।

के० डी० इन्दौरिया—श्रीगंगानगर

दीवाना का अंक २४ प्राप्त हुआ पाकर मन प्रसन्न हो गया सबसे रोचक मुख पृष्ठ लगा और पत्रिका के भीतर की लेखन सामग्री अत्यन्त रोचक रही। मकान मिल गया, कहानी बहुत अच्छी लगी। उसके लिखने वाले तक मेरी बधाई पहुंचा दें। इसके साथ-साथ मैं पत्रिका पढ़ने का नियमित पाठक बन गया हूं तथा इस पत्रिका को बार-बार पढ़ने की इच्छा रहती है। आगामी पत्रिका इससे भी रोचक होगी।

प्रबोध कुमार मिश्रा—नैनीताल

दीवाना का ताजा अंक २३ मोहक मुख पृष्ठ से सुज्जित प्राप्त हुआ, यह अंक मुझे इस कदर पसन्द आया। जिसे मैं लिख नहीं सकता। पैरोडी शतरंज के खंडारी, मुझे बेहद ही पसन्द आई। कहानी मीर बीमार हुए, मोटू और पतलू तथा सिलबिल-पिलपिल बेहद ही मनोरंजक थे। इस अंक के विशेष आकर्षण थे—प्रेम-पत्र, चिल्ली लीला, बन्द करो बकवास, मसूरी-नैनीताल को बचाओ, पचतंत्र व मदहोश इत्यादि मुझे बहुत ही अच्छे लगे। कृपया क्यों और कैसे, स्तंभ बन्द कर दें, क्योंकि अब मैं देख रहा हूं इसके प्रति हम पाठकों की रुचि समाप्त हो गई है। इस के बदले अब एक नया स्तंभ पाठकों के चुटकले, आरम्भ करें। जिसमें केवल पाठकों के लतीफे ही प्रकाशित हों।

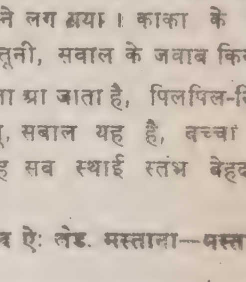
श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिसगंज

'दीवाना' का अंक २४ मिला। मुख पृष्ठ बहुत ही आकर्षक लगा। 'गरीबी हटाओ', फिल्मी स्टाइल बहुत ही पसन्द आई। नया धारावाहिक उपन्यास पढ़ कर रोंगटे खड़े हो गये। पिलपिल-सिलबिल 'मोटू-पतलू' 'बच्चा झमूरा'-पढ़ कर पेट में बल पड़ गये। 'क्यों और कैसे' बहुत ही ज्ञानवर्धक स्तंभ है। 'काका के कारतूस', 'आपस की बातें' सभी स्थाई स्तंभ बहुत पसन्द आये।

हरीश गेरा—रिवाड़ी

दीवाना का अंक २३ मिला पढ़ा तो··· तबीयत खुश हो गयी। चिल्ली लीला को पढ़कर बहुत हंसी आई। फिल्म की कहानी शतरंज के खंडारी पढ़ कर हंसते-हंसाते पेट में दर्द होने लग गया। काका के कारतूस, चाचा बातूनी, सवाल के जवाब किस ढंग से देते हैं मजा आ जाता है, पिलपिल-सिलबिल, मोटू-पतलू, सवाल यह है, बच्चा झमूरा, फैंटम यह सब स्थाई स्तंभ बेहद पसन्द आये।

सैयद ऐ: लेड. मस्ताना—मस्तान नगर



दीवाना अंक २३ का मुख पृष्ठ बड़ा ही रंगों भरा, विचित्र तथा हास्यास्पद रहा। 'चिल्ली लीला' तथा अन्य स्थायी स्तंभों ने बहुत मनोरंजन किया। 'मसूरी-नैनीताल के बचाने के उपाय' बड़े ही बुलन्द हैं। चिल्ली द्वारा लिखित लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के नाम प्रेम-पत्र में दी गई सलाह बहुत ही उपयुक्त है। 'आपस की बातें' तथा 'फैंटम' मेरे बहुत ही प्रिय स्तंभ हैं। क्या आप 'आपस की बातें' तथा 'फैंटम' के पृष्ठ नहीं बढ़ा सकते हैं? आपके कुशल सम्पादन का बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं क्योंकि दीवाना को सदाबहार पत्रिका बनाने में आपका शत-प्रतिशत हाथ है। दीवाना को देखते ही मन खिल उठता है।

रवि रंजन—पटना (बिहार)

'दीवाना' का चमचमाता हुआ अंक २४ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ इतना सुहावना था इतना लुभावना था कि बस क्या बताऊं। चिल्ली लीला पढ़ी तो हंसी तो रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। 'गरीबी हटाओ' फिल्म स्टाइल यदि देश में लागू कर दिया जाए तो देश से गरीबी चन्द ही दिनों में दूर हो जाएगी। 'चना कुरमुरा' तो इस बार सचमुच ही कुरमुरा था। नया धारावाहिक उपन्यास 'दूसरी आत्मा' शुरू करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। ले० संगीता को मेरी तरफ से बहुत ही शुभकामनाएं।

राजेश भुटानी—रिवाड़ी

लाखों लोगों का प्यारा दुलारा दीवाना का अंक २३ मिला। मुख पृष्ठ देखते ही पैसे वसूल जान पड़े। फिल्मी पैरोडी शतरंज के खंडारी, अच्छी लगी। आपसे निवेदन है कि इसे हर सप्ताह छापा करें। सिलबिल-पिलपिल भी अच्छे थे। फिक्र तौंसवी को उनके लेख (मीर बीमार हुए) के लिए बधाई, बाकी सामग्री ठीक थी।

पवन खत्री 'बैरागी'—इन्दौर

'दीवाना का अंक नं० २५ देखा और पढ़ा जैसा कि दीवाना का हर अंक एक से बढ़कर एक होता है इसी तरह यह भी अंक अच्छा था मगर अफसोस कि आपने दीवाना के दिल यानि मोटू-पतलू नामक स्तम्भ में इतना बुरा कागज लगाया कि सारे स्तम्भ के अतिरिक्त दीवाना की भी शोभा जाती रही मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप दीवाना में सफेद और बढ़िया कागज लगाया कीजिए चाहे इसके लिए दीवाना की कीमत ही क्यों न बढ़ानी पड़े। नया धारावाहिक उपन्यास दूसरी आत्मा के लिए लेखक संगीता जी को मुबारकबाद!

मोहम्मद जुबैर खां— रामपुर

आज ही दीवाना का नया अंक २४ मिला. मुखपृष्ठ पर निगाह पड़ते ही हंसी छूट पड़ी। इस अंक के सभी स्तम्भ रोचक लगे। खासकर मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल मदहोश आदि। इस अंक में संगीता का नया धारावाहिक उपन्यास पसन्द आया। मेरी आपसे एक शिकायत है कि आपने इस बार छपाई की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया?

रामसेवक गर्ग—ग्वालियर

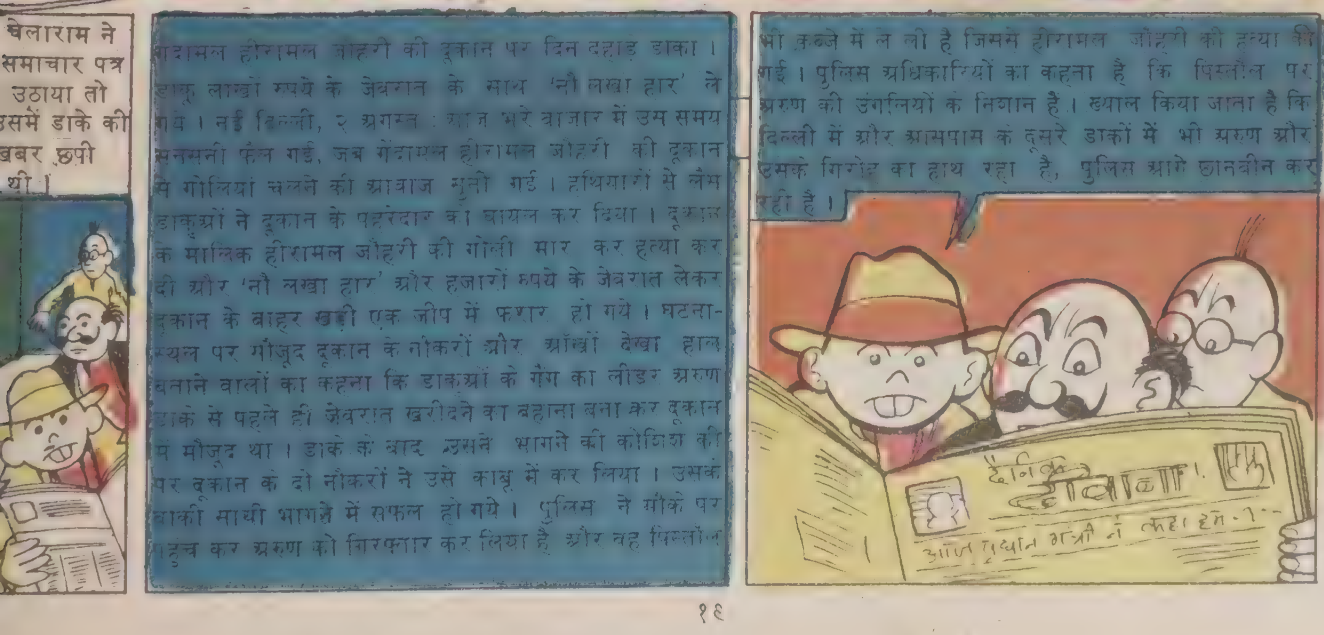
मोटू-पतलू

देखिये, मोटू-पतलू के पल्ले क्या-क्या मुसीबतें पड़ी हैं। वे प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर पोटैटो से एक ऐसा कम्प्यूटर मानव ले आये थे, जो हर काम साधारण मनुष्य से अधिक कुशलता से करने की क्षमता रखता था। पर मोटू ने उसके दिमाग का कोई ऐसा पेच कस दिया है जिसके कारण कम्प्यूटर मानव हर काम उल्टा करने लगा है। मोटू-पतलू ने इसे बड़ी मुश्किल से काबू में किया हुआ है। खुद भूखे रह कर वह उसे हर प्रकार की ऐश करवा रहे हैं ताकि उसका ध्यान तोड़-फोड़ की ओर न जाये।

मोटू-पतलू के पल्ले जो दूसरी मुसीबत पड़ी है, उसका नाम है घसीटा राम। डा० झटका की खास दवा पीकर उनमें किसी का विरोध न करने की आदत पड़ गई थी। फिर डा० झटका ने जानवरों का अस्पताल खोलने के लिये कुछ नई दवाइयां बनाईं और उनका प्रयोग घसीटा राम पर किया तो उसकी हालत कुछ से कुछ हो गई है और उनकी विरोध न करने और सब का भला चाहने की आदत ज्यों की त्यों बनी हुई है। घसीटा राम का यह चलता-फिरता मुर्दा भी मोटू-पतलू के पल्ले पड़ा है और इन मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिये उन्होंने चेलाराम से सहायता मांगी है।








केस जितना साफ लग रहा है, उतना साफ नहीं है । मुझे इसकी छानबीन करनी होगी
दो मुसीबतें पहले ही सर पड़ी थीं, यह तीसरी और आ गई ।
मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा छानबीन के लिये
हाँ यह मुसीबत तो टलेगी हमारे सर से ।
और जनाब वहाँ अपना कोई ऐसा बीस साल का तजुर्बा दिखायेंगे कि हत्या के केस में कोई मेरी हत्या कर देगा । आप यहीं रहिये । मेरे साथ चलने की कोई जरूरत नहीं ।
और चेलाराम अपनी गाड़ी लेकर पुलिस स्टेशन की ओर चल दिया ।
केस बिल्कुल साफ है, गेंग का लीडर घटनास्थल पर पकड़ा गया है । पिस्तौल पर अरुण की उंगलियों के निशान हैं ।
दूकान के नौकरों का कहना है डाके के समय हर डाकू के मुह पर एक ही नाम था । अरुण, यह जेवर भी लूट लो, अरुण उन हारों को मत छोड़ो । अरुण नौ लखा हार इस निजोरी में है, और जब लूट मार करके सब डाकू भागे, तो भागते-भागते अरुण पकड़ा गया ।
अरुण की इससे पहले की हिस्ट्री ?
अच्छी नहीं है, वह गरीब घराने से ताल्लुक रखना है । हाकी का प्लेयर रहा है । और उसे हाकी में मार पीट करने की आदत रही है ।
पहले वह किसी जुर्म में पकड़ा गया है ?
जी नहीं, अब पकड़े जाने से पहले न पकड़ा जाना किसी को बेगुनाह साबित नहीं करता । इसके अलावा एक और बात है ।
यह तस्वीर देखो
यह अरुण के कमरे की तलाशी लेने पर मिली है । अरुण हाकी का खिलाड़ी है और इस तस्वीर में वह अपनी हाकी की टीम के साथ बैठा है ।
पर इस टीम के आधे खिलाड़ियों के नाम पुलिस के 'बस्ता बे' में हैं, यानी सब के सब बदमाश, पहले के सजायाफ्ता और आज सब रूपोश हैं । यह तस्वीर साबित करती है कि हाकी की टीम का एक बहाना रहा है । इसके पर्दे में अरुण ने पेशेवर क्रीमिनलों का एक गिरोह बनाया और डाका डाला ।
इन सब बातों से अरुण अपराधी सिद्ध होता है, सब सबूत उसके खिलाफ हैं । फिर मैं इस केस की छानबीन करके अपना समय क्यों नष्ट करूं । आप यही कहना चाहते हैं इंस्पेक्टर कुमार ?
बिल्कुल ।
पर मैं कुछ और गहराई तक जाना चाहता हूं । आप अपने रिकार्ड में नोट कर लीजिये, मैं प्राइवेट डिटैक्टिव के रूप में इस केस को अपने हाथ में ले रहा हूं ।
बहुत अच्छा, बैस्ट आफ लक ! मगर यह मत भूलिये, हमने उसे घटनास्थल पर 'रेड हैंडिग' पकड़ा, उंगलियों के निशानों वाली पिस्तौल के साथ ।



गाड़ी लेकर चेलाराम अब ग्रेटर कैलाश में सुधा की कोठी की ओर चल दिया।
लगता है उलझी हुई गुत्थी का असली सिरा अब तक हाथ नहीं आया है।
गुत्थी को कैंची से काट दो। सिरे ही सिरे बन जायेंगे। फिर कोई सा भी सिरा हाथ ले लेना।
हैं, यह किस की आवाज आई पीछे से?
बेड़ा गर्क हो गया, तुम कब आ गये गाड़ी में?
यूं पूछो, मैं कब नहीं था गाड़ी में? और इससे पहले पुलिस में? और इससे पहले पुलिस स्टेशन में तुम इस समय मुसीबत में हो। मैं हर मुसीबत में फंसे का साथी हूं। तुम्हें एक सच्चे साथी की जरूरत है, और मुझसे बड़ा सच्चा इस समय संसार में कोई नहीं।
सुधा की कोठी आ गई, पर इस कोठे को कहां फैंकूं जो पीछे लदा है, यह किसी भी समय जनाजा निकलवा देगा मेरा।
जिस समय भी तुम कहोगे!
कोठी में पहुंचे तो दरवाजे पर ही सुधा से भेंट हो गई।
मैं चेलाराम हूं, डिटैक्टिव ७०७।
आइये!
आप कौन हैं?
मैं डिटैक्टिव राम हूं घसीटा ७७७।
आइये मैं औरों से आपका परिचय करवा दूं।
मि० पी० टी० ओझा यह मेरे अंकल हैं।
पी. टी. ओ. मतलब है पलट कर देखो तो कुछ और उलट कर देखो तो और…
यह घसीटा राम जनाजा निकलवा देगा अपना।



डैडी की डैथ के बाद हमारी
जायदाद और फैक्ट्रियों की देखभाल अंकल ही करते हैं
यह हैं मिस्टर विमल प्रकाश, सेठ जय प्रकाश के पुत्र । एक प्रकार से यह हमारे ही परिवार के सदस्य हैं ।
'परिवार' पर कोई 'पराया वार' करे यह बात इन्हें किसी कीमत पर मंजूर नहीं होगी ।
यह चौड़े
में मरवा
देगा मुझे ।
हमारे परिवारों का सम्बन्ध इस हिसाब से और भी गहरा हो जाता है कि पिता जी चाहते थे कि मेरा विवाह विमल प्रकाश से हो । मेरे पिता जी ने इनके पिता जी को ऐसा वचन दिया था । पर मैं किसी हद तक इसके विरुद्ध रही हूं ।
और मैंने इस बात का कभी बुरा नहीं मनाया, सुधा को किसी से भी विवाह करने की पूरी आजादी है ।
और मैंने भी सदा यही सलाह दी है, बेटी जो तुम्हें पसन्द हो उससे विवाह कर लो । पर अपने विमल प्रकाश में भी कोई बुराई नहीं है ।
छोड़िये अंकल, सुधा अगर रात को भी दिन कहे तो उसे दिन कहना मैं अपना फर्ज समझता हूं ।
सच पूछिये तो मैंने इस प्रश्न पर कभी संजीदगी से विचार नहीं किया ।
आपके पिताजी ने आपके लिये कितनी जायदाद छोड़ी है ?
अंकल को पता होगा, मुझे तो पता नहीं ।
कुल फैक्ट्रियां और कोठियां मिला कर कोई दस करोड़ की ।
और मेरे पिताजी ने जो जायदाद छोड़ी है अंकल ?
वह कोई पन्द्रह करोड़ की होगी ।
वैरी गुड, वैरी गुड। हजारों और लाखों की तो यहां बात ही नहीं है ।


और अरुण ? जो डाके और हत्या के अपराध में पकड़ा गया है ?
वह बेचारा बहुत गरीब है।
हर बात को दौलत के तराजू में तोलना चाहिये क्या ? मैं यह जानना चाहता हूं कि उससे आपका क्या सम्बन्ध है ?
वह मेरा मित्र है।
मित्र है बस ?
वह हाकी बहुत अच्छी खेलता है, और मुझे स्पोर्टस में बहुत शौक है।
हाकी, स्पोर्टस, मित्रता, मैं आगे की बात जानना चाहता हूं, विवाह की।
'मैंने कहा ना विवाह के बारे में मैंने आज तक कुछ सोचा ही नहीं।
सुधा ठीक कह रही है डिटैक्टिव, बस वह सुधा का मित्र रहा है, यह एक दूसरे के साथ घूमते फिरते थे। पिक्चर जाते थे, यह कोई बड़ी बात नहीं। कहां करोड़पति सुधा और कहां वह गरीब हाकी प्लेयर, बस सरसरी सी मुलाकात थी इनकी।
फिर यह हत्या और डकैती के केस में इतनी रुचि क्यों दिखा रही हैं।
क्योंकि मैं यकीन के साथ कह सकती हूं कि इन बातों से अरुण का कोई सम्बन्ध नहीं। उसने कोई डाका नहीं डाला।
मैं उससे जेल में जाकर मिली हूं। उसने मेरी कसम खाकर कहा है कि उसने डाका नहीं डाला।
वह डाके के समय वहां मौजूद था।



अगले धमाकों के लिये अगले सप्ताह इन कलाकारों के अगले हंगामें फिर देखिये ।



बच्चा झमूरा और
बरसात के मजे
एक रोज बच्चा झमूरा गर्ल्ज होस्टल के पास खड़ा था और यह सोच ही रहा था कि बरसात का यह मौसम और इस मौसम में अगर होस्टल की लड़कियों का साथ मिल जाए तो बात ही क्या है।
तभी बूंदा बांदी के कुछ असार हुये और होस्टल की लड़कियां भी वहां आ गईं।
बच्चा झमूरे ने अपना छाता लड़कियों को दे दिया वह उनके कुछ काम आ सके यह तो उसकी खुशकिस्मती थी।


इस बेचारे को भी छाते के नीचे ले लो। ऐसी भी क्या बात है।
मैं तो पहले ही कहता हूं। मेरी गर्ल फ्रेंडज मुझ बेचारे का बहुत ख्याल रखती हैं। लड़कियों का साथ और फिर छाते के अन्दर इतने पास का साथ···कुछ मत पूछो!
इ···इ···इतने···प···प···पास का साथ। ब···ग···सब···कुछ मत पूछो।
यह बच्चा झमूरे की किस्मत है कि वह लड़कियों पर
जान छिड़कने में सबसे ऊपर है।
अगर कोई यह न पूछे कि इस समय कौन
छाते के नीचे है।

खेल खेल में

एस० मक़्बूर हुसैन 'कावरी'—बीकानेर

प्र० : हॉकी में अब तक पाकिस्तान कितने विश्व कप जीत चुका है ?

उ० : दो बार पाकिस्तान विश्व कप जीत चुका है। विश्व कप हर बार अलग-अलग नहीं दिये जाते। कप एक ही है पिछली बार भारत के पास था। बारसीलोना में हारने के बाद वही कप पाकिस्तान को मिला।

विमेश चन्द्र शर्मा—फतहनगर

प्र० : भारतीय टीम में आस्ट्रेलिया दौरे पर यजुवेन्द्र को क्यों नहीं ले जाया गया।

उ० : युजुवेन्द्र युवा खिलाड़ी है उनकी बारी भी आ ही जायेगी। यदि वे अच्छे खेल का प्रदर्शन करते रहे तो।

प्र० : हमारे गांव में रणजी क्रिकेट-क्लब है उसमें हर वर्ष मई या जून में क्रिकेट प्रतियोगिता रखी जाती है। उसमें तीन चार जिलों की करीब १५ टीमें भाग लेती हैं, उसका उद्घाटन समारोह क्रिकेट खिलाड़ी विश्वनाथ से कराना चाहते हैं क्या वो इसे स्वीकार करेंगे ?

उ० : इसके लिये आपको विश्वनाथ से सम्पर्क करना पड़ेगा।

नरेन्द्र चन्द्र—मौरड़ा

प्र० : भारत का सर्वश्रेष्ठ हाकी खिलाड़ी कौन है ?

उ० : फिलहाल तो भारतीय हॉकी संकट में बादलों से घिरा है। कुछ नजर नहीं आ रहा है।

सुभाष चन्द्र गुप्ता—बुलन्दशहर

प्र० : क्रिकेट के टैस्ट मैचों में कितने खिलाड़ियों ने एक ही ओवर में ६ छक्के मारे हैं तथा उनमें से कितने इस समय भी खेल रहे हैं ?

उ० : टैस्टों में किसीने ६ छक्के नहीं मारे हैं। प्रथम श्रेणी मैचों में भी केवल इसका एक ही उदाहरण है। वह है जो सोबर्स का

किशोर कुमार—बिहार

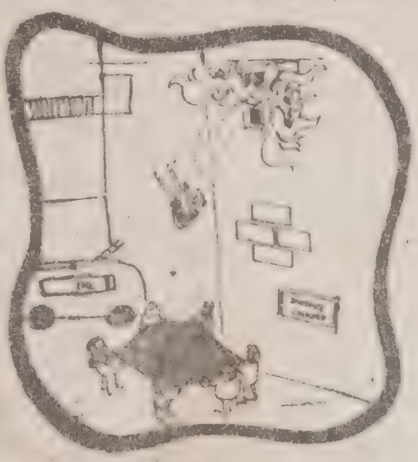
प्र० : विश्व हेवीवेट मुक्केबाजी चैम्पियन मुहम्मद अली जो लियोन स्पिंक्स नामक मुक्केबाज द्वारा हाल ही में पराजित हो गये हैं तो क्या इससे पता चलता है कि अधिक उम्र हो जाने के कारण उनकी शक्ति क्षीण हो गई अथवा अभी पुनः विश्व खिताब जीतने लायक शक्ति है। आप किस तथ्य से सहमत हैं ?

उ० : उम्र का तकाजा तो है ही लेकिन मुहम्मद अली जिद ठान लें तो एक बार फिर जीत सकते हैं, वह भी एक दो वर्ष की अवधि में ही। उसके बाद उम्र जरूर धोखा दे देगी।

एफ० के० मोहरी 'परवाना'—गांव हुसनसर

प्र० : पाकिस्तान की हॉकी टीम में ऐसी कौन सी खूबी है जो तारीफ-ए-काबिल कही जा सकती है ?

उ० : उनका कलात्मक खेल व ताल-मेल तथा फारवर्डों की आक्रमण शक्ति।



विनय कुमार—(बिहार)

प्र० : क्या भारत के कुछ ऐसे बॉलर हैं जो फास्ट गेंदबाजी करते हैं और स्वीन भी कराते हैं ! अगर हैं तो उनका नाम और उनका पता देने का कष्ट करें ?

उ० भारत के पास सच्चे अर्थों में फास्ट मानने लायक फास्ट बॉलर नहीं हैं। जो हमारे पास ओपनिंग बालर हैं उन्हें हम इसी प्रकार फास्ट बालर मानते हैं जैसे गरीब आदमी चनों को बादाम समझ कर खाता है। (नये युवा उभरते खिलाड़ियों में से हरयाणा के कपिल देव से भविष्य में आशा की जा सकती है)

गोपाल सिंहल—फतहनगर (राज०)

प्र० : क्रिकेट में 'मैन आफ दि मैच' की घोषणा का निर्णय किस आधार पर किया जाता है ?

उ० : इसका निर्णय पहले से नियुक्त एक समिति करती है। पूरे मैच में जिस खिलाड़ी के खेल से सर्वाधिक मनोरंजन हो या जिसके खेल से मैच के परिणाम पर सर्वाधिक असर पड़ा हो यह बातें ध्यान में रख कर समिति निर्णय करती है।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी—विक्रम गंज

प्र० : इस समय शतरंज का विश्व में सबसे अच्छा खिलाड़ी कौन है एवं किस देश का ?

उ० : अखबार पढ़ते रहिये इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय फिलीपीन में इसी बात का फैसला करने के लिये रूस के एनातोली कारपोफ और स्विटजरलैंड में बसे रूसी शरणार्थी विक्टर कोर्चनोई के बीच शतरंज का युद्ध हो रहा है।

राकेश कुमार जैन—गौहाटी-१

प्र० : ओलम्पिक में भारत को हॉकी के अलावा किस खेल में पदक मिले हैं ?

उ० : कुश्ती में भारत को रोम ओलम्पिकस में कॉस्य पदक मिला था।

अजीत कुमार बर्णवाल—गिरिडीह

प्र० : विश्वनाथ अपनी धर्मपत्नी कविता से लम्बा है या छोटा। कृपया विश्वनाथ गवासकर तथा कविता के कद की लम्बाई फुट में बताएँ।

उ० : तीनों का कद लगभग बराबर-बराबर है।

हंस बाथला—पानीपत

प्र० : पाकिस्तान जाने वाली भारतीय क्रिकेट टीम का नेतृत्व कौन करेगा ?

उ० : बिशनबेदी और सुनील गावस्कर में से ही कोई करेगा।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वालीबाल कैसे खेलें

द्वितीय—इस नियम के अनुसार किसी खिलाड़ी द्वारा जाल को छू लेना एक दोष माना जाता है। यदि दो प्रतिद्वन्द्वी जाल का समकालिक स्पर्श करते हैं तो इसे नियम का दुहरा उल्लंघन माना जाता है। तदुपरान्त खेल को दुबारा खेलने का नियम है।

तृतीय—गेंद पर प्रहार करते समय जाल (नेट) के ऊपर से गेंद को विरोधी टीम के प्रांगण में स्पर्श करना दोष माना गया है, परन्तु यदि ऐसा रोक उत्पन्न करने के लिए किया जाए तो नियम के अन्तर्गत यह दोष-मुक्त है।

चतुर्थ—जाल के ठीक नीचे मध्य रेखा खिंची होती है जो दोनों दल जो आपस में खेल रहे होते हैं—उनके क्षेत्रों को बराबर-बराबर बाँटती है।

यदि खेल में जोश आ जाने के कारण—या दौड़ कर गेंद पर वाली मारने के कारण किसी दल का कोई खिलाड़ी मध्य रेखा के पार चला जाता है—या उसका पैर या हाथ मध्य रेखा के पार चला जाता है तो ऐसी स्थिति में यह फाउल गिना जाता है और वह दल सर्विस तथा अंक अर्जित करने का अधिकार खो देता है तथा दूसरे दल को सर्विस व अंक बनाने का अधिकार मिलता है।

इसलिए खिलाड़ियों को सावधानी से खेलना चाहिए। जाल को हाथ से छूना भी निषिद्ध होता है। ऐसे समय भी सर्विस का अधिकार खो देना पड़ता है।

खेल में काम आने वाले संकेत

खेल में अम्पायर जिन संकेतों और शब्दों का इस्तेमाल करता है वे नीचे दिए जा रहे हैं। खेल में जब गेंद बाहर चली जाती है या खिलाड़ियों को किसी प्रकार आदेश देना होता है तो अम्पायर और रैफरी इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हैं—

अंक या पाइन्ट—अंक अर्जित करना।

साइड आउट—सेवा या सर्विस में परिवर्तन।

लेट सर्विस—सर्विस करते समय गेंद का जाल को छूना।

टाइम आउट—विश्राम या अन्य किसी परिवर्तन के हेतु खेलांतर-काल की मांग करना।

आउट आफ बाउन्ड—गेंद का सीमा रेखाओं के परे चले जाना।

डेड बाल—गेंद का निष्क्रिय हो जाना।

आउट—गेंद का प्रांगण से बाहर चले जाना।

डबल कान्टेक्ट—जब कोई एक खिलाड़ी गेंद को दो बार एक साथ स्पर्श करे।

फोर हिट्स—किसी दल या गेंद को तीन बार के बजाय चार बार स्पर्श करना। (नोट : किसी दल को एक बार में गेंद को तीन बार विभिन्न खिलाड़ियों द्वारा स्पर्श करने का अधिकार है)।

नेट—यदि कोई खिलाड़ी जाल को छू ले।

अंडर नेट—यदि कोई खिलाड़ी जाल के नीचे से विरोधी पक्ष के मैदान में चला जाए।

हेन्ड ओवर—जाल के ऊपर से नियम विरुद्ध खेलना।

फाउल—किसी भी प्रकार का नियम भंग करना।

गणना करना

खेल के पाइन्ट को अम्पायर बोलता जाता है। दोनों दलों के पाइंट वह एक साथ बोलता है। जो दल सर्विस करता है—उसके पाइंटों को वह पहले बोलता है और बाद में दूसरे दल के पाइंट।

उदाहरण के लिए दल (क) के ५ पाइंट हैं और दल (ख) ने मान लीजिये ८ पाइंट अर्जित किये हैं—और मान लीजिये सर्विस का अधिकार इस समय दल (क) को मिला है और वह दल सर्विस कर रहा है तो अम्पायर इन पाइंट को बोलेगा—५—८ या फाइव—एट।

और जब सर्विस का अधिकार दल (ख) को मिलेगा तो अम्पायर दल (ख) को सर्विस का अधिकार देते हुए कहेगा—सर्विस चेंज एट—फाइव या—आठ—पांच।

पाइंट तो वही दल अर्जित करेगा जो सर्विस कर रहा होगा। पाइंट बढ़ने पर इसी क्रम से अम्पायर जिस दल के पाइंट इसी प्रकार जोड़ता जाता है। बस ध्यान रखने योग्य यही बात है कि जो दल सर्विस कर रहा होता है—उसके पाइंटों को अम्पायर पहले बोलता है। बाद में दूसरे दल के पाइंट।

गणना लिखने वाला अधिकारी एक गणना पत्र का उपयोग करता है जो दो भागों में विभक्त होता है एक भाग में एक दल के खिलाड़ियों के नाम तथा दूसरे भाग में दूसरे दल के खिलाड़ियों के नाम होते हैं। सुरक्षित खिलाड़ियों के नाम भी इसमें लिखे होते हैं।

गणना पत्र के नीचे दोनों भागों में बराबर-बराबर १५ या १७ तक की संख्यायें लिखी होती हैं। जो दल अंक अर्जित करता है उसकी तरफ की एक संख्या काट दी जाती है जिसका अर्थ है उस दल ने अंक अर्जित किया है।

इसी तरह जो दल अंक अर्जित करता है उसी के भाग का उतने ही नम्बर का अंक काट दिया जाता है।

यदि खिलाड़ी को चेतावनी देनी होती है तो उसके नाम के आगे डब्ल्यू (W) या चेतावनी (चेता०) लिख दिया जाता है।

यदि कोई खिलाड़ी घायल हो जाता है या किसी अन्य कारण से किसी खिलाड़ी को बदलना है तो उसके नाम के आगे लिखी क्रम संख्या को काट कर उसके स्थान पर सुरक्षित खिलाड़ी की क्रम संख्या लिख दी जाती है।

जो खिलाड़ी कप्तान होता है—उसके नाम के आगे कप्तान लिख दिया जाता है।

प्रत्येक गेम के लिए अलग-अलग गणना पत्र का उपयोग किया जाता है।

समाप्त

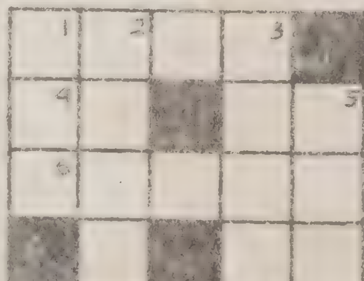




फैण्टम और
शादी समारोह
मुझे खुशी है तुम और इनकी शादी में शामिल हो रहे हो।
यह मौका दोबारा नहीं आने वाला।
मम्मी है न आश्चर्य की बात ! ये हैं आइवरी लाना के राष्ट्रपति !
बंगाला के राष्ट्रपति लमाका मुआगा।
आओ सब मिलकर घने जंगलों में चलते हैं !
क्या तुम राजा से शादी कर रही हो ?
मम्मी, चलते फिरते भूत से।
जंगलों के मुखिया पैदल ही खतरनाक रास्तों से होते हुये…
है ?
फैण्टम की खोपड़ी…
यही जगह है जहाँ हमें जाना है।
यह तो उसकी शक्ल लगती है !
अब क्या होगा ?
राष्ट्रपति मुआगा
शायद ही कोई जगह खाली हो जहां निडर बांदर रक्षा के लिये न हों !
!!!
जंगल के चप्पे-चप्पे से परिचित निडर बांदर जाति के लोग मेहमानों की अगवानी कर रहे हैं।
आयेंगी।
रास्ता बतायेगा…



दीवाना वर्ग पहेली 10 रु० इनाम जीतिये



बायें से दायें

१. एक नायिका द्वारा सामूहिक गाने का आयोजन (४)
४. नाली में से डंडा और लड़ी हटाओ । (२)
६. काला मनवा हेरा फेरी करके कोठी का मालिक बन सकता है । (५)
७. पहाड़ी में मिली हड्डी । (२)
८. मानव के भाग जो इज्जत का सवाल है । (२)

ऊपर से नीचे

१. अंधेरे से पहले एंग्लो-इंडियन स्टायल से मिलने वाला व्यंजन । (३)
२. इसे बनाने में नमक और मिर्च का खूब प्रयोग होता है । (२-१-२)
३. उल्टे पाजामे को ... लगाइये, बीच में नीचे से ... फिर ऊपर से पानी डालिये ... जायेगा । (५)

अंतिम तिथि ... -८-७८

श्री राजनारायण प्रतियोगिता

भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री राजनारायण ने भारतीय राजनीति में जो उठापटक की है और हाल में ही जो कारनामे और करिश्मे दिखाये उन्हें सब जानते हैं— उनके द्वारा देश की की गयी अथक सेवाओं के बदले हम उन्हें दीवाना के पाठकों की तरफ से कुछ भेंट करना चाहते हैं—आप ही सुझाइए कि क्या दिया जाये श्री श्री १००८ राजनारायण जी को जो कि उनके कामों और व्यक्तित्व के अनुरूप हो ? भेंट का मूल्य पांच रुपये से अधिक की कीमत का न हो— सर्वश्रेष्ठ सुझाव देने वाले पाठक को दस रुपये इनाम । अंतिम तिथि—१६-६-७८

फिल्मी गीत पैरोडी प्रतियोगिता इनाम पुरस्...

आप हमें निम्न फिल्मी गीत की पैरोडी बना कर भेजिए जिसकी पैरोडी सर्वश्रेष्ठ हास्यप्रद होगी उसे पुरस्कार मिलेगा ?

गीत—दो दीवाने शहर में, रात या दोपहर में ढूंढने हैं इक आशियाना ....

अंतिम तिथि — १६-६-७८

प्र० : सैनिक चींटियाँ क्या होती हैं ?

सुरेश पुरी—अमृतसर

उ० : संसार के जीवों में चींटियों को सबसे अद्भुत जीव कहा जा सकता है चींटियाँ २५०० से ३५०० हजार किस्मों की होती हैं। संसार में शायद ही ऐसा कोई भाग हो जहां चींटियां न पाई जाती हों। संसार में पाई जाने वाली सभी चींटियां लगभग एक सी ही दिखाई देती हैं केवल अन्तर छोटी या बड़ी होने का होता है ये १/६ इंच से लेकर २ इंच लम्बी तक होती हैं परन्तु इनके जीवन तथा रहन-सहन की आदतों में बहुत फर्क होता है।

उदाहरण के लिए चींटियों की एक ...चक जाति सैनिक चींटियों की होती है ये चींटियाँ जीवित चीजों को खाती हैं। प्रश्न है कि चींटी जैसी नन्हीं जीव बड़े बड़े जानवरों को कैसे खा लेती हैं। ये चींटियां लाखों की तादाद में निकलकर आगे बढ़ती हैं तथा राह में आने वाली हर जीवित चीजों को खा जाती हैं। इनकी ये बड़ी संख्या जब बाहर निकलती है तो बड़े से बड़े पशु भी भाग खड़े होते हैं क्योंकि इनकी ये भारी संख्या राह की हर चीज का आसानी से खात्मा कर देती है, चाहे वो मक्खी हो या मगरमच्छ हो अथवा कोई जख्मी शेर हो।

अमरीका में पाई जाने वाली सैनिक चींटियां केवल छोटे-छोटे जीवों को ही खाती हैं ये लीजनरी चींटियां अमरीका के दक्षिणी ...त्तरी तथा मध्यवर्ती भागों में पाई जाती हैं। ये चींटियां भी कई-कई हजारों की लाइनों में चलती हैं। मैक्सीको में इन लीजनरी चींटियों की सेना आने पर लोग घर छोड़कर चले जाते हैं। इनकी महान सेनायें घरों में घुसकर सारे काकरोच, चूहे, चूहियां और छिपकली इत्यादि को खा लेती हैं इनके घरों से चले जाने के बाद लोग अपने किटाणु रहित घरों में वापिस आ जाते हैं।

सैनिक चींटियां अपने बच्चे पालने तथा भोजन इकट्ठा करने के लिए नौकर या दास ... रखती हैं। अभोजन चींटियां सारी सैनिक होती हैं और इस कारण बच्चे पालने या भोजन इकट्ठा करने में असमर्थ होती हैं। तथा इस कार्य को करने के लिए दूसरी ...ली चींटियों की कालोनी पर धावा बोल कर उनके अंडे तथा ककून उठा लाती हैं। ... लूट क... सामना करने वाली काली

क्यों और कैसे

चींटियों के अण्डे से निकलने वाली सब चींटियां अभोजन चींटियों के दासों के समान ही सब काम करती हैं।

प्र० : सबसे पहले बिजली किसने और कब बनाई तथा उसके दिमाग में इसका विचार कैसे आया ?

केवल प्रकाश—काशीपुर

किशोर भाटा—रिवाड़ी

उ० : ये बड़ी अजीब बात है कि हजारों वर्ष के अध्ययन के बाद भी अब तक ये पता नहीं चलाकि वास्तव में बिजली क्या है? आज हर तत्व को छोटे-छोटे आवेशित अणुओं से बना मानते हैं तथा इस सिद्धान्त के अनुसार बिजली केवल आवेशित अणुओं की बहती धारा है।

आज से लगभग ६०० वर्ष बी. सी. में ग्रीक लोगों को पता चला था। अम्बूर को यदि किसी चीज पर रगड़ा जाये तो उसमें कागज के छोटे छोटे टुकड़े तथा डाट के टुकड़ों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति पैदा होती है।

बिजली के अध्ययन में सन् १६७२ तक कोई विशेष उन्नति नहीं हुई थी। उसी वर्ष, आटो-वोन-यूरिक नामक व्यक्ति ने तेजी से घूमती सलफर की गेंद के पास अपने हाथ को रख कर एक अधिक शक्तिशाली करंट पैदा किया था। सन् १७२६ में श्री स्टीफन ग्रे ने पता लगाया कि धातु के माध्यम से करंट को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकता है, तथा इनको 'कन्डक्टर' का नाम दिया गया। ये भी पता चला कि कुछ दूसरे पदार्थ जैसे कांच, सलफर, अम्बर तथा मोम से करंट नहीं ले जाया जा सकता तथा इनको 'इन्सूलेटर' का नाम दिया गया। इसके बाद की महत्वपूर्ण खोज सन् १७३३ में एक फ्रांसीसी डू फे नामक व्यक्ति द्वारा की गई। इन्होंने बिजली के पोजीटिव तथा नैगेटिव आवेशों का पता चलाया, उस समय इन्होंने इन्हें दो भिन्न प्रकार की बिजली समझा था।

परन्तु इन सबसे अधिक बिजली की जानकारी देने का प्रयत्न बेन्जेमिन फ्रेंकलीन ने किया। इनके विचार से सब तत्वों में तरल बिजली होती है तथा रगड़ से एक तत्व का कुछ तरल पदार्थ दूसरे तत्व में जाकर बिजली उत्पन्न करता है। आज हम इस तरल को नैगेटिव करंट वाले इलेक्ट्रोन का मानते हैं।

सम्भव है सबसे महत्वपूर्ण बिजली विज्ञान का विकास सन् १८०० में असैंड्रो वोल्टा द्वारा बैटरी की खोज से हुआ। इस बैटरी ने संसार को बिजली की धारा के निरन्तर तथा विश्वसनीय स्रोत प्रदान किया। जिसके कारण बिजली के प्रवाह तथा प्रयोग की महत्वपूर्ण खोज का कार्य आगे बढ़ा।

प्र० : धुएं से आंखों में आंसू आ जाते हैं ऐसा क्यों होता है ?

सुरेशचन्द्र शर्मा—जबलपुर

उ० : धुआं क्या है ? धुआं वास्तव में कुछ जलनशील पदार्थों के पूर्ण रूप से न जलने पर उत्पन्न होता है अर्थात् जलाये जाने वाले पदार्थ यदि पूरी तरह जल जायें तो धुआं पैदा नहीं होगा।

धुंआ काफी हानिकारक होता है, इसका स्वास्थ्य जायदाद तथा हरियाली पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बड़े औद्योगिक शहरों में धुए की परत के कारण सूर्य की पूरी गर्मी धरती तक नहीं पहुँच पाती, जिससे स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक अल्ट्रा-वायलेट किरणें भी हैं। यदि धुंआ वायु द्वारा उड़े न तो, शायद शहरों पर तो हर समय धुंए के बादल ही मंडराते रहते तथा फेफड़े तथा दिल के रोग से मरने वालों की संख्या बढ़ जाती। धुंआ आंखों में लगने पर उसमें विद्यमान क्षयकारी तेजाब जलन पैदा करते है और इस जलन से आंख की रक्षा करने के लिये अश्रुग्रन्थि तेजी से स्राव पैदा कर आंखों को धोने का कार्य करती हैं, ये ही स्राव आंखों से आंसू के रूप में निकलता है। शहरों में धुंए को कम करने के उपाय खोजने का आजकल काफी प्रयत्न किया जा रहा है।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

काश पर्यटन विभाग

पर्यटन स्थलों

का इस प्रकार प्रचार

करता

फतेहपुर सीकरी पधारिये



At Fatehpur Sikri, Sheikh Salim Chishti's tomb proves the point that the *Taj Mahal* is not all there is to AGRA.

खंडहरों में रहने वाले गीदड़ों का टूरिस्टों को देख मनोरंजन होता है !

जिम कार्बेट पार्क



Answer the call of the wild at CORBETT NATIONAL PARK or the DUDHWA SANCTUARY. It's not just another Zoo Story

टाइगर के दर्शन कीजिये और कब्जी का इलाज कीजिये। (इसकी चिंघाड़ सुनकर व नज़दीक से सामना होने पर आपको दस्त लग जायेंगे।

सारनाथ के दर्शन करें



SARNATH—Where Buddhism began...The gilded image symbolises *Lord Buddha* explaining the *Code of Duty.*

अपनी आंखों से उस जगह को देखिये, जिसके कारण हिस्ट्री के कई चैप्टरों का आपको रट्टा मारना पड़ता है।

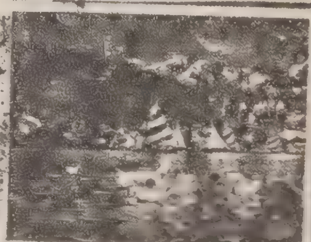
आगरा का ताजमहल देखिए



THE TAJ MAHAL—Before which mankind's most depressing cliche...Nothing is Perfect crumbles.

प्रेमियों का तीर्थ, साथ ही पागलखाना भी देखिये, जो प्रेमियों का आखिरी स्टेशन है।

नैनीताल आइये



NAINITAL around the *Naini Lake* with it's mountains, lakes and smiling faces offers a traveller infinite possibilities.

बोट वालों से चमड़ी उतरवाइये।

हिममंडित हिमालय के दर्शन कीजिये



The awe-inspiring snow-clad *Himalayas* are all over *North U.P.*.. tangible and approachable

और अपनी बीबी से इसकी तुलना करें। (वह भी तो आपके जीवन की इस पहाड़ जितनी ही बड़ी समस्या है।)

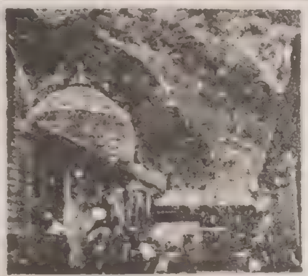
केदारनाथ के दर्शन कीजिये



KEDARNATH—3,522 metres high...standing above the flower-decked *Mandakini Valley*. One of *Lord Shiva's* 12 eternal *Jyotirlingas*.

और प्रार्थना कीजिए कि वापिस घर लौटने पर आपको घर सही सलामत मिले। (चोरी-वोरी न हो गई हो।)

बद्रीनाथ यात्रा का पुण्य कमाइये



BADRINATH—Idyllic & unspoiled...on either side the *Nar* and *Narayan Ranges* and in the distance the Majestic *Neelkanth Peak*.

पुण्य कमाने पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। दूसरे आप जैसे अंधविश्वासियों के सिर पर साधुओं और हजारों दूसरे मुफ्तखोरों की रोटी चलती है।

बनारस में गंगास्नान कीजिए



VARANASI— By the *Ganga*... Hinduism's greatest city. Called *Kashi* or *Light* by the devout.

नमूनिया और छूत की बिमारियों का उपहार मुफ्त प्राप्त कीजिये।

कवितायें

शेरनी

नेता जी मंच पर यों दहाड़े
"हमने राजनीति के अखाड़े में,
अच्छे-अच्छे पहलवान तक पछाड़े!
हमने घर जाकर देखा तो,
नेता जी,
पत्नी के हाथों बेलन से पिटे थे,
डर के मारे,
घिघिया कर चारपाई के नीचे छिपे थे॥

सही जाति

एक तथाकथित व्यंग्य कवि,
कविता पढ़ते समय,
मुंह मटका रहे थे,
कभी भौंह, तो कभी—
जीभ मुख से बाहर लटका रहे थे।
इस क्रिया के बारे में पूछा एक श्रोता ने,
तो बोले—कविता का सारा गूढ़ रहस्य,
शब्दों के बजाय 'एक्टिंग' के अन्दर होता है
आज का व्यंग्य कवि,
मानव नहीं सचमुच बन्दर होता है।

आजाद रामपुरी

पहाड़

शिक्षक ने पूछा—
नरेन्द्र सिंह
बताओ पहाड़ का लिंग
नरेन्द्र ने दिया उत्तर—
स्त्रीलिंग सर
शिक्षक ने बिगड़ कर कहा—
तुम्हारी अक्ल है मोटी
नरेन्द्र बोला—
पहाड़ स्त्रीलिंग है
क्योंकि उसकी
होती है चोटी।

सबका दाता क्लर्क

कृष्ण शंकर भटनागर

आपको एक सुनी सुनाई बात सुनाता हूं। एक माध्यमिक विद्यालय के निरीक्षण के दौरान 'इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स' ने पाया कि अंग्रेजी का अध्यापक विद्यार्थियों को 'जी-आई-आर-एल' का उच्चारण 'गर्ल' के स्थान पर 'ग्रिल' करता रहा था। उन्होंने फौरन ही यह बात उस अध्यापक के 'नोटिस' में लाई। अध्यापक का उत्तर था दो सौ रुपये में तो साहब जी-आई-आर-एल 'ग्रिल' ही होता है और यदि आपको 'गर्ल' करवाना है तो पूरा वेतन देना होगा।

इस उदाहरण का जिक्र मैं इस सिलसिले में कर रहा हूं कि कल आफिस से घर आते समय शाम के समय रास्ते में मेरे हाथ एक पाण्डुलिपि लग गई ! रास्ते में पड़ी थी ना मालूम किसकी थी···जिज्ञासावश पढ़ा तो ज्ञात हुआ कि कुछ क्लर्कों की 'डिमान्डस' हैं जो शायद अपने मालिकों द्वारा मनवाने के लिये भेजी जा रही होंगी।

लैटर था 'सेवा में···' वाला हिस्सा फट गया था, इसलिये यह तो अन्दाजा लगाना कठिन ही था कि किसको लिखा गया···हां ! किनके द्वारा लिखा गया, यद्यपि नाम अंकित नहीं है, तथापि ज्ञातिबोध अवश्य हो गया और वह है 'क्लर्क ! मैंने कहीं पढ़ रखा है।

'चपरासी करे ना चाकरी, अफसर करे ना वर्क,
दास···कह गये सबका दाता क्लर्क।'

बेहरहाल, उस क्लर्क वर्ग की डिमान्डस मैं आपके सामने रखता हूं। मांगें उनकी हैं शब्द मेरे अपने हैं···इसलिए हो सकता है कि भोजन मैं उस तरह ना परोस पाऊं, जैसे वे लोग कर सकते हैं या हो सकता है दाल में जीरे की बजाय मेथी से छौंक (तड़का) लग गया हो।

कहावत है जितना गुड़ डालेंगे मीठा तो उतना ही होगा ! इस बात को आधारशिला मान उन लोगों को प्रथम मांग का स्वरूप गढ़ा गया है ! क्लर्क लोगों की डिमान्डस है कि उन लोगों की तनख्वाह इतना बढ़ा दी जाये कि महंगाई का अहसास तक उन लोगों को न छू सके !

द्वितीय मांग जरा अधिक ही न्यायोचित लगती है लिखते हैं, 'रबड़ को यदि अधिक खींचेंगे तो टूटने का भय रहता है। इसलिये क्लर्कों को कभी भी उनकी इच्छा के विरुद्ध काम करने के लिए न कहा जाये केवल कार्य में मन होने पर सम्पूर्ण होगा अन्यथा नहीं···। तीसरी डिमान्ड तो साहब, ऐसे लग रही है जैसे पुलाव में किशमिश चमकती है।' चाहे हमारे और अलाउन्स बन्द कर दिये जायें सिर्फ कथनी है ऐसा करना नहीं है) किन्तु हमारा 'पब्लिक अलाउन्स' बन्द करने के लिए कभी हमसे ना कहा जाये···' सच भी तो है यह तो टानिक का कार्य करता है, कार्य क्षमता बढ़ाता है।

लास्ट डिमान्ड थोड़ी अजीब-सी किन्तु रोचकता लिये है। कहते हैं—'ड्यूटी आवर्स' घटा दिये जायें ! कोई पूछे, 'भई क्यूं'···? तो इस 'क्यूं' का जवाब है उनके पास। लिखते हैं, 'ग्यारह बजे तो हम आफिस आते हैं, ग्यारह से साढ़े ग्यारह तक काम करने के बाद···साढ़े ग्यारह से बारह तक चाय पीते हैं फिर साढ़े बारह से दो बजे तक लन्च मनाने के बाद, तीन से साढ़े तीन बजे तक गप्पें और चाय तदोपरान्त सवा चार से पौने पांच तक शाम की चाय (जो अति-आवश्यक है) के पश्चात् पांच बजे छुट्टी मनाते हैं। तो साहब इस तरह दस बजे से पांच बजे तक के कार्यकाल में हम सिर्फ तीन घण्टे काम करते हैं। बाकी समय चाय-पीने और लन्च में लगता है। तो तीन घण्टे का कार्य सात घण्टे में करवाना क्या न्यायसंगत है ? फिर यही काम हमसे सीधे-सादे वास्तविक समय में क्यूं ना करवा लिया जाये। इसीलिये हमारे 'ड्यूटी आवर्स' १० बजे से १ बजे तक होने चाहियें।'

डिमान्डस तो साहब ! ठीक और न्याय संगत हैं। बाकी चार घण्टे में ये बेचारे लोग घर का काम और अनेक आवश्यक कार्य कर सकते हैं। सब्जी ला सकते हैं, कपड़े धो सकते हैं, खाना बना सकते हैं आदि-आदि···।

सब बातें आप लोगों के सामने खुलकर रख दी हैं···अब आप लोग जरा सोचिये कि क्या इन पीड़ित-बुद्धिजीवियों की डिमान्डस अपना औचित्य नहीं रखतीं ! चलते-चलते आपको बता दूं कि वह पाण्डुलिपि मेरे पास सुरक्षित है जिसकी हो वह···बाकी समझदारी की बात है। ●

अब्बा जान की-दौलत

बाल कृष्ण गर्ग

खफ़ा अब्बा हुए हमसे
कि "क्यों करता सफ़ा दौलत ?"
कहा करते "बुरी है लत,
कसम खाले न पीने की !
ए बरखुर्दार ! बचके रह
उमर की इस पचीसी में,
न गा अब नग़मए-उल्फत,
लगा दूकां करीने की !"
लिखा पर पाक पोथों में,
'जहाँ दारे-फ़ना सारा,
कि लम्हे की खबर भी क्या
न मरने की, न जीने की !
तभी तो कर रहा मित्रों,
सफाई बेवफाई से,
कि अब्बाजान की दौलत
कमाई जो पसीने की !

★★★

अपना मतलब

—मदन गोपाल शर्मा

अपने मतलब के लिए
जब हम
गधे को बाप बना सकते हैं;
तो फिर किसी को
कुछ भी मान लेने में
क्या बुराई है ?
जहां स्वार्थ का ही प्रश्न
प्रमुख हो
वहां हर काम में
भलाई ही भलाई है।

★★★

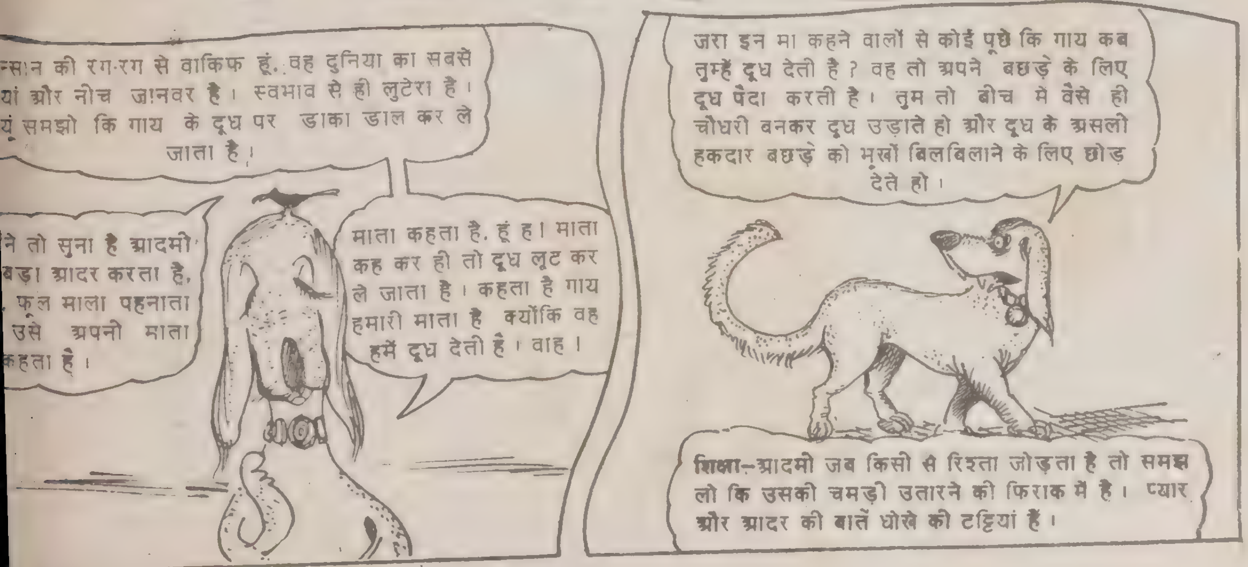
नेता और महात्मा

—मदन गोपाल शर्मा

आजकल
किसी नेता और महात्मा के
भाषण में
काफी कुछ समानता है।
दोनों का उद्देश्य
आदर्श बनाकर
आपको उत्साहित करना है.
स्वयं को निः स्वार्थ
घोषित कर
स्वार्थ सिद्धि करना है।


है मियां, वह जो गाय खड़ी है वह कौन है ? क्या हारी मा है ? बार-बार तुम्हारी तरफ देख रही है ?
हां, मेरी मा है।
तब तो तुम्हारे मजे होंगे ! तुम्हारी मा के थन कितने बड़े हैं। रोज दस-बीस लीटर दूध तो तुम्हें मिलता ही होगा पीने के लिये।
नहीं भई कहां ? मुझे तो एक छटांक दूध भी नसीब नहीं होता।
ज एक बछड़े से बात की, बड़ा झूठ बोलने लगा। था मुझे तो एक छटांक दूध भी नसीब नहीं होता। मा के इतने बड़े-बड़े थन हैं, सोचता होगा कि कहीं यह दूध न मांग ले।
ना है वह बछड़ा ठीक ा हो। देखने में कम- गता था या नहीं वह बछड़ा ?
था तो मरियल सा ही।
बस फिर उसकी बात ठीक होगी। उसे सचमुच ही छटांक भर दूध ही मिल पाता है। बाकी सारा आदमी निचोड़ कर ले जाता होगा।
तुम तो इन्सान को काफी नजदीक से जानते हो। जरा बताओ तो वह ऐसा क्यों और कैसे करता है ?

पंचतंत्र


न्सान की रग-रग से वाकिफ हूं, वह दुनिया का सबसे यां और नीच जानवर है। स्वभाव से ही लुटेरा है। यूं समझो कि गाय के दूध पर डाका डाल कर ले जाता है।
ने तो सुना है आदमी बड़ा आदर करता है, फूल माला पहनाता उसे अपनी माता कहता है।
माता कहता है, हूं ह! माता कह कर ही तो दूध लूट कर ले जाता है। कहता है गाय हमारी माता है क्योंकि वह हमें दूध देती है। वाह !
जरा इन मा कहने वालों से कोई पूछे कि गाय कब तुम्हें दूध देती है ? वह तो अपने बछड़े के लिए दूध पैदा करती है। तुम तो बीच में वैसे ही चौधरी बनकर दूध उड़ाते हो और दूध के असली हकदार बछड़े को भूखों बिलबिलाने के लिए छोड़ देते हो।
शिक्षा—आदमी जब किसी से रिश्ता जोड़ता है तो समझ लो कि उसकी चमड़ी उतारने की फिराक में है। प्यार और आदर की बातें धोखे की टट्टियां हैं।

जब मियां तानसेन दिल्ली लौटे !

आशुतोष तिवारी

जब तानसेन मियां को यमदूत, यमराज के दरबार में ले गये तब दरबार खचा-खचा भरा था, पैर रखने की भी जगह नहीं थी। आखिर हो भी क्यों ? आज संगीत सम्राट तानसेन को यमराज के फैसले अनुसार स्वर्ग या नर्क सिधारना था। सभी फैसला जानने के लिये उत्सुक थे।

तानसेन को देखकर दरबार में मौन छा गया। यमराज ने मियां के नाम की फाईल खोली तो उनकी आंखें आश्चर्य से फैलती चली गईं, कारण था फाईल में पड़े ढेर सारे सिफारशी पत्र जिनकी संख्या ने पिछले सारे रिकार्ड तोड़ दिये। वहां के प्रेस रिपोर्टरों ने तानसेन के साथ-साथ उनकी फाईल की भी फोटो खींचीं। स्वर्ग के बड़े-बड़े महात्माओं व धर्मराजाओं ने प्रार्थना की थी कि सर तानसेन को स्वर्ग में रहने दिया जाये। स्वर्ग के निवासियों ने उन्हें "सर" की उपाधी दी थी। दूसरी तरफ नर्क के बड़े-बड़े अपराधियों ने धमकी भरे सिफारशी पत्र लिखे जिनमें कहा गया कि "मियां तानसेन को नर्क में रहने दिया जाये वरना........?"

यमराज के मन में इच्छा हुई कि क्यों न संगीत का आनन्द हम भी लूट लें, सो उन्होंने मियां तानसेन से सुनाने की प्रार्थना की। संगीत आरम्भ हुआ। दोनों तरफ के दरबारियों (स्वर्ग व नर्क) ने वाह-वाह में जान की बाजी लगा दी। संगीत सभा समाप्त हुई। यमराज ने तब फैसला सुनाया "मैं आये हुये सिफारशी पत्रों को मध्ये नजर रखते हुये दफा ४२० के तहत सेक्शन ००७ के अर्न्तगत उन्हें स्वर्ग व नर्क के बीच रहने की आज्ञा देता हूं।" वहां के प्रेस रिपोर्टरों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। मियां तानसेन अब शान्ती पूर्वक दिन गुजारने लगे।

स्वर्ग व नर्क के बीच में रहते-रहते मियां अब बोरियत महसूस करने लगे। उन्हें अपनी धरती याद आने लगी। उन्होंने यमराज से छुट्टी मांगी। यमराज ने उन्हें पन्द्रह दिन की खुशी से छुट्टी दे दी और पुष्पक विमान से धरती पहुंचाने की व्यवस्था कर दी। मियां ने यमुना के किनारे विमान उतरवाया। वे आस-पास की गन्दगी देखकर यहां के राजा को गालियां देने लगे। जैसे-तैसे नाक दबाकर उन्होंने स्नान किया। बाहर निकले और जामा मस्जिद की ओर चल दिये। नमाज पढ़कर जब बाहर निकले तो लाल किले को देखकर उनका मन बाग-बाग हो गया। इण्डिया गेट की तरफ की सफाई देखकर फूले न समाये। उन्होंने सामने से आते एक जवान तगड़े व्यक्ति जो जीनस की चुस्त पेंट व शर्ट पहने हुए था, से कहा, "भइया, ये राजा कौन हैं।" तभी उनके चेहरे पर जोरदार घूंसा पड़ा। "राजा नहीं-राजा उस्ताद कहो।" तानसेन मियां कराहते हुये उठे और चुपचाप खिसक लिये।

थोड़ी देर बाद वह कनॉट प्लेस में घूम रहे थे। तभी उनके कान में संगीत की आवाज आयी। बेचारे खिचें ... पॉप म्यूजिक की तेज आवाज ... चिल्लाहट वाला गाना उन्हें नहीं ...

संगीत सम्राट के सामने ... ऐसी तौहीन ! भला बेचारे कैसे ... थे। दौड़कर स्टेज पर चढ़ गये। ... करवा दिया।

फिर संगीत प्रेमियों की ओ... उन्होंने अपने मुगलिया लहजे ... फरमाया। उन्होंने कहा—"इस ... झिलमिलाती हुई रंगीन महफिल ... सम्राट तानसेन का आदाब।" ... नाम सुनकर हंसी गूंज उठती है ... इस देश के राजा-नहीं-नहीं, रा... से यहां आने की इजाजत मिल ... ये देखो उनकी शाही मुहर। (अ... बायां सूजा हुआ चेहरा सामने क... हॉल में हंसी का फव्वारा फट प... आपके सामने एक गीत रखने ज... और आशा करता हूं कि यहां ए... संगीत प्रेमियों का आशिर्वाद ... मिलेगा। और जब उन्होंने पॉप ... तेज संगीत में अपना अ-आ-आ-... गीत गाया। तो हॉल में वो कु... कि बस पूछो मत।

जब सर तानसेन हॉल से ... रखकर भाग रहे थे तब सड़े ... टमाटर से रंगे हुये रंगीन ... शोभा पर चार चांद लगा रहे ... ऐसी गालियां पड़ीं जिसको शा... के रियाज में तो क्या सपने में ... धरती की याद करते ही कांप ...

चना कुरमुरा

'देखो, तुम ठीक काम करो। वरना मुझे कोई और नौकर रखना पड़ेगा।

'हां, मालिक, यह ठीक रहेगा। मैं और वह मिलकर सारा काम आसानी से कर सकेंगे।'

मालिक अपने मकान के चिकने व हाल ही में धुले हुए फर्श पर फिसल पड़ा। यह देखकर नौकर को हंसी आ गई। अपनी झेंप मिटाते हुए मालिक ने नौकर को डांट कर कहा—हंसता क्यों है ?'

नौकर ने सिटपिटा कर कहा, 'मैं तो इस बात की खुशी मना रहा था कि आपके चोट नहीं लगी।'

●

नौकर—'मैं पांच वर्ष से आपके यहाँ नौकरी कर रहा हूं; और अभी तक मुझे वही तनखा मिल रही है।'

मालिक—'हाँ, मुझे मालूम है। मगर क्या करूं, मैं अपने दिल को सख्त बना नहीं पाता; क्योंकि हर बार जब मैं तुम्हें निकालने का इरादा करता हूं, तब मुझे तुम्हारे बाल-बच्चों का ख्याल आ जाता है।'

●

एक डाक्टर ने रोगी के नौकर को ताकीद की कि तुम्हारा मालिक बीमार है। बीमारी के कारण वह बहुत ... गया है और बहुत घबराता ... तुम ऐसा किया करो कि वह ... तुम हाँ कह दिया करो। ऐसा ... कुछ प्रसन्नता रहेगी।

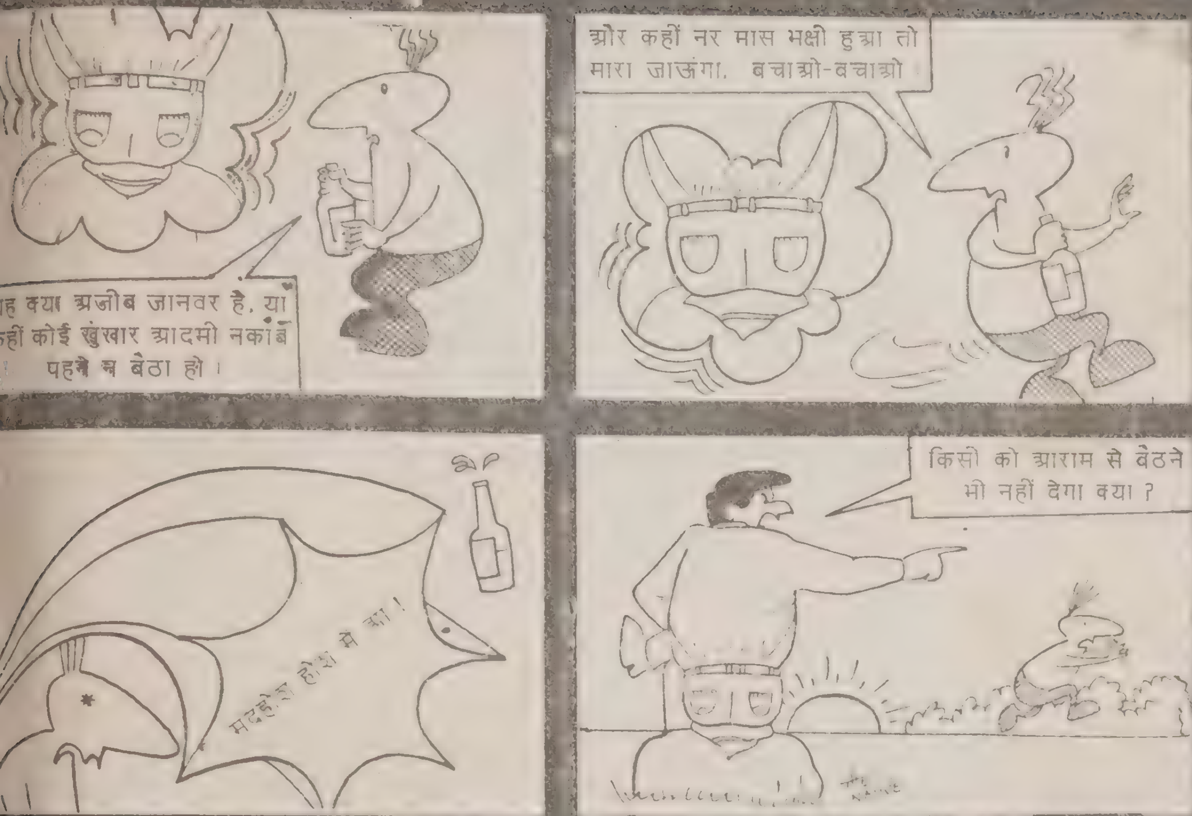
डाक्टर के कहे अनुसार ... नौकर मालिक के कुछ भी क... सरकार कह दिया करता था।

एक दिन मालिक उकता... 'बीमारी क्या आई, सभी मुझ... रहते हैं। अब तो मैं मर जात... अच्छा होता।'

नियम के अनुसार नौकर ... सरकार।'

●

मदहोश



रिणाम

सारे पाठकों का हल
मिलने पर निणर्य लाटरी
कर करना पड़ा - सं०

क नं० २५ में प्रकाशित

पहेली का हल

अ	ग	र	त	ला
स	त	ही	■	प
मे	■	म	जा	र
य	श	■	र	वा
ता	क	ना	■	ह

ता:- राम निवास शर्मा
री० टेक्नीशियन
विजन फैक्ट्री-चम्बाघाट
लन- 173213

अंक नं० 27 में प्रकाशित

वर्ग पहेली का हल

ब	ह	रा	इ	च
ह	■	स	ला	ख
द	गा	■	य	■
वा	■	प्रा	ची	न
स	न	म	■	ट

विजेता:- अमरजीत
अरविंद्र
5/10 कृष्णा नगर
दिल्ली - 110051

धांय का परिणाम

अंक नं० 26 में प्रकाशित
हल : **कड़ाक**
विजेता : भगवान दास
1132. बर्तन मार्किट
सदर बजार दिल्ली-6

गुमनाम का परिणाम

प्रतियोगिता नं० 34
तारिका का नाम: सारिका



दीवानी बात :-
तुम्हारी इस मुस्कुराहट पर
हो गये सब दीवाने।
अब आगे क्या होगा यह
तो अल्लाह ही जाने।

विजेता:- कुमारी नीता गुप्ता
135 गांजीपुरा
जबलपुर (म० प्र०)


दीवाना आफिस के पिछवाड़े एक परिवार में रहते हैं श्रीमान जी और श्रीमती जी और उनका एक नौकर है छज्जू
सवाल यह है ?
के अन्तर्गत अब एक नया सिलसिला देखिये :
छज्जू क्या समझे ?
खुले आम प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई के पुत्र और श्री चरण सिंह के परिवार पर आरोप लगाये जा रहे हैं। कुछ समझा छज्जू ?
समझ गया जी।
और श्री अटल विहारी वाजपेई का यह हवाला भी दिया गया है कि आरोप लगाने पर श्री राम ने सीता को त्याग कर बनवास दे दिया था। यहां कौन से राम कौन सी सीता को बनवास देंगे ? कुछ समझा छज्जू ?
समझ गया जी।
आरोप लगाने वालो ने ३२ आरोप लगाये हैं। क्या समझा छज्जू ?
कितने भयंकर और घोर नाचार आ रहे
मतलब समझीं इनका श्रीमती जी ?
छज्जू ही समझेगा श्रीमान जी। मैं तो बस
हूं कि पिछली सरकार जो बदली, तो
किसी की समझ में नहीं आया
श्री देसाई ने कहा है लोगों ने तो मह
सब समझ गया जी।
जवाब में कहा गया है मुझे आरोपों
आती। मतलब है आयोग बनकर
और कहा हिम्मत है तो राज्य सभा
बोलो और अपना अंजाम देखो।
छज्जू समझ गया जी
छज्जू समझ गया जी। अब कोई
आया









नारायण जोधपुर ंन फ्रैण्ड जाना व

प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, बज-रिया, सवाई माधोपुर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, नये-नये साथियों से दोस्ती करना व पढ़ना।

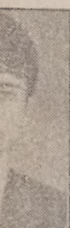
समर बहादुर सिंह बाहरपुर कलां, बालवर गंज, जौनपुर, (उ. प्र.), १६ वर्ष, लड़के और लड़कियों से पत्र मित्रता तथा उपन्यास पढ़ना।

सलीम मोमद, पुराना सीलमपुर, म० न० ४४/४८, दिल्ली, १७ वर्ष, मेहनत करना तथा मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, बड़ों की सेवा करना।

हरचरन सिंह सेतिया, विभव नगर, आगरा, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, खेलना-कूदना और पढ़ना-लिखना, फिल्में देखना आदि।

शिव कुमार अग्रवाल, न्यूपेंतन नगर शाही बाग, अहमदाबाद, १० वर्ष, दीवाना पढ़ना, स्कूल में पढ़ना, पत्र मित्रता करना तथा खेलना।

विनोद शंकरराव गोरकर, शास्त्री बिल्डिंग नागेश्वरवाड़ी महाराष्ट्र-४३१००१, १६ वर्ष, डाक टिकट जमा करना, ड्राईंग बनाने का शौक।









ा, नगर १६/१, म. प्र. करना,

कृष्ण कुमार गोपा जेसलमेरिया जालोरी बारी के अन्दर जोधपुर, लाइट हाउस, जोधपुर, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, रचनायें लिखना, गप्पें हांकना।

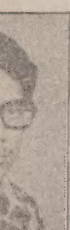
इन्द्रजीत सिंह 'सहदेव' सिंह मेडिकल स्टोर, मोहद्दीपुर, गोरखपुर-२७३००१, २२ वर्ष, पेन फ्रेंड्स, दीवाना पढ़ना, ग्रीटिंग कार्ड एकत्र करना।

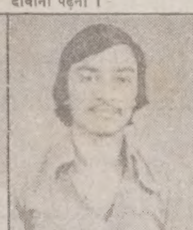
मुहम्मद खालिक अनसारी, मोती मोटर वर्कस राजाबरी, जोरहाट, (असम), १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, रेडियो सुनना, दीवाना पढ़ना।

मोहित कुमार जैन, एफ१२/२, माडल टाऊन, दिल्ली-११०००९ १५ वर्ष, कार चलाना, छोटे-छोटे बच्चों की मरम्मत करना, फिल्में देखना।

आशुतोष नीमा, १३ शंकराचार्य मार्ग, गली नम्बर ६, उज्जैन (म० प्र०); १४ वर्ष, कहानी लिखना, शतरंज खेलना।

राज कुमार तिवारी द्वारा श्री रघुनन्दन लाल तिवारी, म० नं० ३७/३५, गीलीस बाजार, कानपुर, (उ० प्र०), १४ वर्ष, टिकट संग्रह करना।






. सरसा, १६ वर्ष, दीवाना ट संग्रह

सुशील कुमार सिंह पुत्र श्री धर्मपाल सिंह, ४३ बलब रोड, जमालपुर, मुंगेर, १४ वर्ष, बागवानी करना तथा दीवाना पढ़ना।

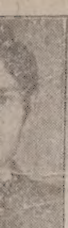
महम्मद नसरुद्दीन, सन्तोषपुर महेश तालवा, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, मुर्गा चुराना, सबको धोखा देना व चिल्ली की करतूतों पर हंसना।

अशोक कुमार सिघानियाँ, फ्लैट नं० ६६, चमनलाल म.कॅंट, गुमटी नं० ३ कानपुर, १७ वर्ष, छोटे बच्चों को प्यार करना, दीवाना पढ़ना।

ओ. एम. नारंग, नारंग क्लाथ स्टोर्स, मालवा मील चौराहा इन्दौर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना तथा दीवाना पढ़ना, फिल्में देखना।

पुष्कर लाल अरोड़ा, शिव आइसक्रीम फैक्ट्री नदबई, जि० भरतपुर (राज०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, पढ़ना।

भानु प्रकाश 'राजपूत' थाना रोड, प्रेमनगर, मुरसान (अलीगढ़), १६ वर्ष, हर वर्ष की जानदार और शानदार गतिविधियां जानना।









ताराचंद ा कोर्ट, वर्ष, पत्र-ना पढ़ना

शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव द्वारा श्री शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, साइट नं० २, २६/६, बाबू पुरवा कालोनी कानपुर, २० वर्ष, गाने गाना।

सतोष कुमार धावरी, १/३, मालवीया नगर, १७ वर्ष, धर्मेन्द्र के बारे में बातें करना, नावल लिखना, दीवाना पढ़ना व डाक टिकट संग्रह।

अलोक कुमार माहेश्वरी द्वारा माहेश्वरी पेपर ट्रेडर्स, ३५७ मिरचिमा टोला बरेली, २० वर्ष, फिल्म देखना, पत्र-मित्रता मोटर साईकल चलाना।

सैयद शाहिनशाह हैदर आब्दी 'सुहैल' बी. ए. छात्रावास न०४ ई० एल० पिपलानी भोपाल, (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

श्रीराम निराला, ज-८४ समा कटरा न० ४, नई बस्ती किशन गंज, दिल्ली-७, १६ वर्ष, आहें भरना, पत्र मित्रता करना व पढ़ना।

अमरजीत भारद्वाज, आटो मोबाइल इन्जीनियर स्पाट रोड, अम्बाला शहर, २५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना, फिल्में देखना।







आर० कथा, ८ वर्ष, ों तथा रना।

मोहम्मद हसीब, धनगढ़ी कैलाली नेपाल, १९ वर्ष, नावल और फिल्म देखना, सबसे प्यार करना, दीवाना पढ़ना।

विनोद कुमार जैन, ईसागढ़, सदर बाजार ईसागढ़ १८ वर्ष, जनता की सेवा करना, बड़ों का आदर करना तथा दीवाना पढ़ना।

मानिक कुमार, जे० के० रिफ्यूजी कालोनी पो० डाल्टन गंज, पलामू, (बिहार), २१ वर्ष, पत्र मित्रता करना, गीत गाना, गिटार बजाना।

अब्दुल रसीद, दीवाना स्टाल दीवाना, इम्पारियल सिनेमा, आगरा कैन्ट, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, बड़ों का आदर करना, पढ़ना-लिखना।

ना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रैंड' लिखना व फोटो के पीछे अपना

रा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग दिल्ली-११०००२

ा अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम —

शौक —

दवाना व तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

साप्ताहिक भविष्य

प० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

३१ अगस्त से ६ सितम्बर ७८ तक

मेष : व्यापारिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो सप्ताह अच्छा है, परन्तु घरेलू परेशानियां या झगड़े बिना कारण ही पैदा होते रहेंगे, भाग्य आपका साथ देगा और आप हानि के कामों में पड़ने से बचे रहेंगे।

वृष : सप्ताह अच्छा रहेगा, वैसे इन दिनों कामकाज में व्यस्तता काफी बढ़ जावेगी और घरेलू जिम्मेदारी भी बढ़ेगी, अच्छे लोगों की संगत रहेगी, अपरिचित लोगों से हानि का भय रहेगा।

मिथुन : इन दिनों हालात पहले से काफी ठीक चलने लगेंगे, दीर्घकाल से चली आ रही समस्याओं का अन्त हो जावेगा, कई तरह के सुधार होने भी महसूस होंगे, लेकिन साथ-साथ आपको संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा।

कर्क : यह सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है, आप सोचेंगे कुछ—करेंगे कुछ और होगा कुछ। परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, मित्र सहयोग देते रहेंगे, यात्रा सावधानी से करें। चोट या हानि का भय है।

सिंह : इन दिनों किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन होने की संभावना कम है, नई पुरानी उलझनें बार-बार सामने आती रहेंगी, झगड़े आदि से बचें वरना बढ़ भी सकता है, कारोबार ठीक चलता रहेगा।

कन्या : इस सप्ताह के दौरान आपको काफी परिश्रम करना होगा, प्रयास करने पर आपके बिगड़े हुए काम बन जायेंगे, लाभ अच्छा होगा, परन्तु आर्थिक परेशानी किसी न किसी कारणवश बनी ही रहेगी।

तुला : इन दिनों हालातें पहले जैसे ही चलेंगे, फिर भी कारोबार में विशेष सुधार होता महसूस होगा, कोई दिलचस्प कार्यक्रम तय होगा, परेशानियों एवं रुकावटों का सामना करना पड़ेगा।

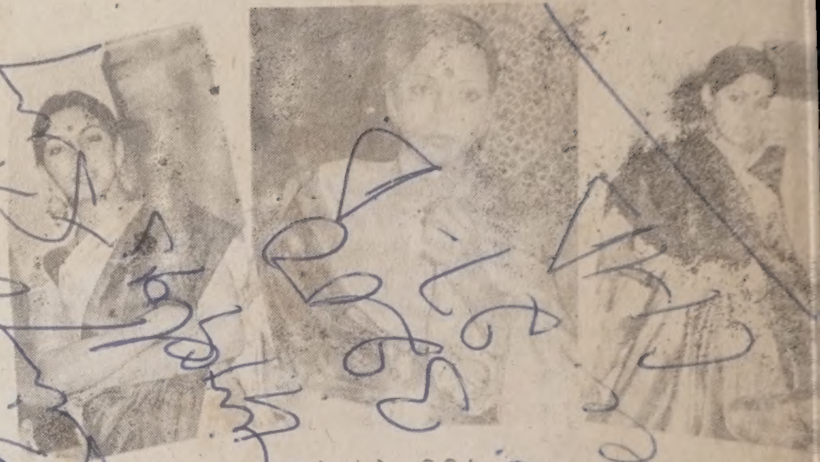
वृश्चिक : कारोबारी हालात ठीक चलेंगे और सुधार होता भी महसूस होगा, आर्थिक लाभ आशा से कम या कुछ देरी से मिलेगा, फिर भी आपके काम ठीक समय पर पूरे होते रहेंगे।

धन : यदि आप कोई नई योजना बना रहे हैं तो यह ठीक नहीं है, नए काम से हानि हो सकती है, लाभ नहीं। वैसे भी यह सप्ताह अच्छा है, स्थाई साधनों में सुधार एवं धन लाभ भी अच्छा होता रहेगा।

मकर : दिलचस्प होने के साथ-साथ यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी कहा जा सकता है, कुछ कामों में सफलता मिल जाएगी और कामकाज में भी व्यस्तता काफी बढ़ेगी, लाभ अच्छा होगा।

कुम्भ : इस सप्ताह के दौरान आप कई तरह के उतार-चढ़ाव होते महसूस करेंगे, अफसरों से मेल जोल, घर-परिवार की समस्याओं से परेशानी प्रयास करने पर सफलता मिल जायेगी।

मीन : व्यापार को सुधारने की कुछ नई बनेंगी, जिन पर व्यय काफी होगा, ... और ठीक समय पर मिलती



अंकुर से 'अतिथि' तक

शबाना आजमी

—विजय भारद्वाज

शबाना आजमी का जन्म १८ सितम्बर १९५२ में हुआ। यह प्रसिद्ध गीतकार व शायर कैफी आजमी व प्रसिद्ध रंगमंचीय अभिनेत्री शौकत आजमी की पुत्री है। सन १९७३ में इन्होंने पूना फिल्म व टेलीविजन इन्स्टीच्यूट से एक्टिंग में डिप्लोमा व स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

शबाना आजमी ना पिनअप गर्ल हैं ना ही सैक्स सिम्बल। उनका अपना अलग ही अस्तित्व है। किसी विशेष वर्ग में शबाना को नहीं गिना जा सकता। इनका प्रभावशाली चेहरा ईश्वरीय देन है। वह जितनी कला में दक्ष हैं उतनी ही खूबसूरत भी है। उनके चेहरे पर वह सभी भाव हैं जो किसी चरित्र को पर्दे पर जीने के लिये आवश्यक हैं।

एक छोटी-सी भेंटवार्ता में मैंने पूछा, 'आप इन्स्टीच्यूट की गोल्ड मैडलिस्ट रही हो आपको बड़े बजट की फिल्में मिल सकती थीं, लेकिन आपने कम बजट की फिल्में साइन करना क्यों स्वीकार किया ?'

मेरे इस सवाल पर शबाना मुंह के अन्दर जीभ को घुमाते हुए बोली, 'मैं अपने कैरियर के प्रति सीरियस हूं। मैंने स्वयं व्यवसायिक बॉक्स आफिस हिट फिल्मों को ... या है और कम बजट की व आर्टिस्ट फिल्मों को चुना है। मेरी पहली फिल्म के. के. अब्बास की 'फासला'। मैं रोल की भूखी नहीं हूं। 'फासला' के बाद 'अंकुर' आई। 'अंकुर' का रोल मुझे प्यारा लगा। सही कहा जाये तो मैं चरित्र से प्रेम करने लगी।'

'भविष्य में आप कलात्मक फिल्मों को प्राथमिकता देंगी या व्यवसायिक फिल्मों को ?'

'आज मेरे पास ढेरों फिल्में हैं जो कलात्मक भी हैं और व्यवसायिक भी। 'अंकुर' वाला रोल हो चाहे 'फकीरा' वाला मैं हर चरित्र को निभाऊंगी।' शबाना ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा।

शबाना आजमी के पास वास्तव में आज कई फिल्में है। इनकी शीघ्र प्रदर्शित होने वाली फिल्म है 'अतिथि'।

यह बेहद मिलनसार और घरेलू हैं। सबसे बड़ी इनमें जो विशेषता है वह यह कि वह कभी अपने मिलने वालों को निराश नहीं लौटातीं, चाहे इन्हें कितना ही जरूरी काम क्यों न हो और अपने 'फैनों' के पत्रों का जवाब अवश्य देती हैं। यदि यकीन न आये तो पत्र-व्यवहार करके देख लीजिये।

पता :—
२५, जानकी कुटीर, जुहू रोड,
बम्बई-४०००४९